सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

अंक 74
वर्ष 2017-18
द्वितीय छमाही

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)
एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू, डाक पेटी सं 4272,
कोच्ची- 682036, भारत

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण
को

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

राजभाषा के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु

विशेष प्रशस्ति-पत्र

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, कोच्ची द्वारा राजभाषा के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु किए गए विशेष सराहनीय कार्यों के दृष्टिगत, कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति यह विशेष प्रशस्ति-पत्र प्रदान करती है।

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा लिए गए निर्णयानुसार सभी सदस्य संगठनों को प्रोत्साहन देने के दृष्टिगत, यह विशेष प्रशस्ति-पत्र उन कार्यालयों को निर्गत किया जाता है, जिन्होंने विगत तीन वर्षों में राजभाषा के सर्वोत्तम निष्पादन हेतु नगर स्तर पर लगातार प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर लिया हो और जिन्हें सामान्य पुरस्कार प्रतिस्पर्धा से बाहर रखा गया हो।

कोच्ची
06.03.2018

(प्रणब कुमार दास)
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, केरल एवं
अध्यक्ष, कोच्ची टॉलिक (कार्यालय)

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का
प्रशस्ति पत्र

श्री प्रणवकुमार दास, प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त, केरल एवं अध्यक्ष, कोच्ची टोलिक से विगत 3 वर्षों में राजभाषा के सर्वोत्तम निष्पादन एवं नगर स्तर पर लगातार प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने हेतु कोच्ची टोलिक का विशेष प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए
डॉ राम मोहन एम. के., संयुक्त निदेशक (विपणन)

सागरिका

राजभाषा समर्पित अर्धवार्षिक गृह-पत्रिका

संरक्षक

डॉ.ए.जयतिलक, भा.प्र.से., अध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री.बी. श्रीकुमार, सचिव

संपादक

श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा.)

उप संपादक

श्रीमती तुलसी नायर,हिन्दी अधिकारी

सम्पादन सहयोग

श्रीमती मृणालिनी पी आरेकर, व.हि.अनुवादक

श्रीमती संगीता जी,वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

श्रीमती सिंधु ए एस, हिन्दी टंकक

पत्राचार का पता

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय,भारत सरकार)

एमपीईडीए भवन, पनंपिल्ली एवन्यू,

डाक पेटी सं 4272, कोच्ची- 682036, भारत

दूरभाष - 91 -484 - 2323245

फैक्स - 91 - 484 - 2313361

इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में उल्लेख किए गए विचार लेखकों के दृष्टिकोण है और एमपीईडीए के विचारों का उससे कोई सरोकार नहीं है । इस प्रकाशन में विद्वत्तापूर्ण लेखों में दी गई सूचनाओं की वास्तविकता का उत्तरदायित्व लेखक पर निहित है । उसके लिए न तो एमपीईडीए और न ही संपादक मण्डल उत्तरदाई होंगे ।

अनुक्रमणिका

10 मडगांव (गोवा) में 21 वीं भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी

15 आंध्र प्रदेश

17 कारगिल द्वारा भारत में पहला मत्स्य चारा संयंत्र का प्रारम्भ

18 हिन्दी पखवाड़ा 2017 का आयोजन

21 भागीदारी शिखर सम्मेलन, 2018, विशाखापट्टनम

22 एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विशाखापट्टनम

29 श्रिम्प संवर्धन-वर्तमान मुद्दों, प्रथाओं ....

36 नन्ही कलियाँ, खिलने दो !!!

38 एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर, नेल्लोर

42 नैतिकता की कहानी

43 हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2018-19 ....

45 तिलापिया कृषि

49 समुद्री...... गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम

51 समुद्री..... गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, नेल्लोर

52 स्वच्छ भारत अभियान - एक कदम स्वच्छता की

54 बिना शब्दों की भाषा

55 सुबह, शिक्षक

56 तीन सवाल

58 चेपला इगुरु (आंध्रा मत्स्य करी)

गोवा में 21 वीं भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी के उद्घाटन के
अवसर पर श्री. मनोहर पारिकर, मुख्यमंत्री, गोवा एवं
डॉ ए. जयतिलक भा. प्र. से, अध्यक्ष, एम पी ई डी ए

डॉ.ए. जयतिलक, भा.प्र.से
अध्यक्ष
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष

प्रेरणोक्ति

अभी हाल ही में एमपीईडीए के प्रयासों से गोवा में सम्पन्न हुए 21वें आईआईएसएस 2018 की अपार सफलता ने राष्ट्र निर्माण की दिशा में हमारे द्वारा किए जा रहे सार्थक प्रयासों पर मुहर लगा दी है। धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय समुद्री खाद्य उत्पादों की मांग बढ़ रही है और इसी कारण से सभी अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्देशीय आयोजनों में बाहरी देशों की भागीदारी बढ़ी है। आज के परिवेश को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में समुद्री खाद्य निर्यात भारतवर्ष के कुल निर्यात में बड़ी भागीदारी के साथ एक अहम भूमिका अदा करेगा।

राजभाषा हिन्दी एक ऐसा क्षेत्र है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्र की अलग पहचान छोड़ता है, अभी हाल ही में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में भारतीय भाषाओं के शब्द प्रमुखता से जोड़े गए हैं जो हमारे देश के लिए एक गर्व की बात है। एमपीईडीए संगठन के कार्मिक प्रत्येक स्तर पर लगातार प्रयास कर रहे हैं कि राजभाषा हिन्दी निर्यात कार्य के साथ इस संगठन की प्रमुख पहचान बने, इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप इस संगठन को लगातार तीन वर्षों से राष्ट्रपति महोदय से **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** प्राप्त हो रहा है।

"सागरिका" का 74वां अंक **आंध्र प्रदेश विशेषांक** है और आशा है कि कार्मिकों की सृजनशीलता इस अंक को सार्थक बनाएगी।

डि जयतिलक

(डॉ ए जयतिलक)

बी श्रीकुमार
सचिव
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण

सचिव

उद्‌गार

वैश्विक परिवेश में आज का समय परस्पर प्रतिस्पर्धा का है और हमें इस बात का हर्ष है कि हमारा संगठन पूर्ण रूप से सफलता की कसौटी पर खरा उतरा है। निर्यात के क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष नई ऊंचाइयों को छूने वाला यह संगठन लगातार तीन वर्षों से माननीय राष्ट्रपति महोदय से **"राजभाषा कीर्ति पुरस्कार"** प्राप्त करके दक्षिण भारत में राजभाषा कार्यान्वयन में सिरमौर बना हुआ है।

गृह-पत्रिका कार्यान्वयन के रीढ़ की हड्डी है और इस संगठन की गृह-पत्रिका सागरिका ने सिर्फ संगठन में ही नहीं बल्कि नगर स्तर पर भी एक अलग छाप छोड़ी है और पाठकों को इसके अगले अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि गृह-पत्रिका **"सागरिका"** का यह अंक आप सभी पाठकों को हमारे संगठन द्वारा आंध्र प्रदेश में किए गए कार्यों से भली-भांति अवगत कराएगा, क्योंकि यह अंक **आंध्र-प्रदेश विशेषांक** है।

"सागरिका" के इस 74वें अंक के प्रकाशन हेतु लेख प्रदाताओं और राजभाषा कार्मिकों को शुभकामनाएं।

(बी. श्रीकुमार)

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

"सागरिका" के इस 74वें अंक को प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है, धीरे-धीरे हम प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए इस "आंध्र प्रदेश" विशेषांक तक की यात्रा करने में सफल रहे हैं। प्रस्तुत अंक में एमपीईडीए संगठन द्वारा आंध्र प्रदेश में निर्यात विस्तार के कार्यों के अतिरिक्त आंध्र प्रदेश की संस्कृति और समाज की जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। पत्रिका के इस अंक में प्रस्तुत लेखों के माध्यम से व्यावसायिक जानकारी के साथ-साथ साहित्य, सृजन और संगठन से जुड़े पहलुओं पर भी जानकारी देने का प्रयास किया गया है।

राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में लगातार राष्ट्रीय एवं नगर स्तर पर उपलब्धियों को हासिल करते हुए हम शिखर के उस चरमोत्कर्ष पर पहुँचने में कामयाब रहे हैं जो कभी दिवा-स्वप्न के समान प्रतीत होते थे, वास्तव में ऐसा प्रबंधन एवं कार्मिकों के राजभाषा हिन्दी के प्रति स्नेह के कारण संभव हो सका।

मुझे पूरा विश्वास है कि **"सागरिका"** का यह 74वाँ अंक पाठकों के लिए पिछले अंकों की भांति रोचक और ज्ञानपरक सिद्ध होगा।

(हिमांशु श्रीवास्तव)

मडगांव (गोवा) में 21 वीं भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी (आईआईएसएस)

तीन दिवसीय 21 वीं भारत अंतर्राष्ट्रीय समुद्री खाद्य प्रदर्शनी (आईआईएसएस), जो समुद्री क्षेत्र की द्विवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय ईवेंट है, दिनांक 27-29 जनवरी, 2018 को मडगाव, गोवा में "सुरक्षित और चिरस्थायी भारतीय जलकृषि" के मुख्य विषय के रूप में आयोजित किया गया था। इसका उद्देश्य भारत में कैप्चर और कल्चर मात्स्यिकी में अपनाई जा रही प्रौद्योगिकीय उन्नति और चिरस्थायी कार्यप्रणालियों को उजागर करना था।

आईआईएसएस 2018 का आयोजन ओपन स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स ग्राउंड, फाटोर्डा, मडगांव, गोवा में समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, (एमपीईडीए) केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के तहत एक सांविधिक निकाय और भारतीय समुद्री खाद्य निर्यातक संघ (एसईएआई) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था । तीन दिनों में इस प्रदर्शनी ने 12 देशों के प्रतिनिधि मण्डल सहित 3,000 से अधिक प्रतिनिधियों और 3,500 से अधिक व्यापार प्रतिनिधियों को आकर्षित किया ।

श्री सुरेश प्रभु, केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने उद्घाटन के अवसर पर प्रतिनिधियों को संबोधित किया एवं सभी राज्यों को निर्यात बढ़ाने हेतु एक व्यापक विपणन और विकास कार्यनीति तैयार करने तथा सैटेलाइट इमेज के जरिए कल्चर मात्स्यिकी के लिए संभावित भूमि के नक्शे की रूपरेखा बनाने हेतु जलकृषि के दोहन के लिए समर्थन का वचन दिया ।

उन्होंने कहा कि सरकार के लिए अंतर्देशीय मात्स्यिकी प्राथमिकता का क्षेत्र है और इसका उद्देश्य सभी 13 तटीय राज्यों के लिए अग्रानुक्रम से जलकृषि विकास के लिए प्रणाली बनाना है ।

मंत्री जी ने कहा, 'समुद्री खाद्य क्षेत्र में जलकृषि मात्र सबसे बड़ा रोजगार उत्पादक नहीं है, यह हमें उस जमीन का उपयोग करने में भी मदद कर रहा है जो किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, उदाहरण के लिए खारे पानी की भूमि। हम अगले

कुछ महीनों में सैटेलाइट इमेजरी का उपयोग करके और व्यवस्थित तरीके से नक्शे लेकर जलकृषि के विकास के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करेंगे। 'हम यह सुनिश्चित करने केलिए कि राज्य इस भूमि का बेहतर इस्तेमाल कर पा रहे हैं, और अपने निर्यात क्षमता का लाभ उठा पा रहे हैं, उनके साथ मिलकर सक्रिय रूप से कार्य करेंगे। सरकार ने भारतीय उत्पादों के लिए ब्रांड इक्विटी का सृजन करने एवं उसको बढ़ावा देने के लिए विश्वभर में 10 विपणन कार्यालय (मार्केटिंग ऑफिस) बनाने का भी प्रस्ताव रखा है।

श्री प्रभु ने कहा कि निर्यातकों को अपने उत्पादों के विपणन को एक बदलती हुई दुनिया में फिर से देखना होगा। उन्होंने कहा 'आज विपणन सिर्फ अपनी वस्तुएँ बेचना मात्र नहीं है, बल्कि उत्पादों की गुणवत्ता , पैकेजिंग , उनकी सामग्री के भंडार और शेल्फ-लाइफ को बढ़ाना और अन्य बातों पर भी ध्यान रखना है ।

डॉ.ए.जयतिलक, अध्यक्ष, एमपीईडीए ने कहा कि आपूर्ति श्रृंखला में अधिक मूल्य वर्धन के लिए संगठन जोर दे रहा है और विदेशी बाजारों की मांग के लिए गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

उन्होंने कहा कि भारत में सीफ़ूड में सूपरपावर बनने की क्षमता है और निर्यात की मात्रा में 20% वृद्धि या इसे दोहरा करने का लक्ष्य मुश्किल नहीं होगा यदि हम इस क्षमता का पूरी तरह से लाभ उठाते हैं ।

इस कार्यक्रम का उद्‌घाटन करने वाले श्री पारीकर ने कहा कि भारत को कम उपयोगिता, बडे एवं क्षमता वाले अंडमान और निकोबार समुद्र तट के संभाव्य मत्स्यन पर अधिक जोर देना होगा। उन्हें चाहिए कि चिरस्थायी गभीर सागर मत्स्यन का पता लगाए और समुद्री जल के रासायनिक खाद्य द्वारा हुए प्रदूषण, मौजूदा मत्स्यन क्षेत्र की अत्यधिक खपत और प्रजनन तलछट की क्षति जैसे मामलों पर ध्यान दें।

अपने उद्‌घाटन समारोह भाषण में, डॉ जयतिलक ने बताया कि वर्ष 2016-17 में भारत ने 11,34,948 मेट्रिक टन समुद्री खाद्य का निर्यात किया था जिसमें मुख्य रूप से शीतित श्रिम्प और शीतित मत्स्य का योगदान रु 37,870.90/- करोड़ था । अप्रैल-नवंबर 2017 के अनंतिम निर्यात आंकड़ों ने समुद्री खाद्य निर्यात में मात्रा और मूल्य (अमेरिकी डॉलर) में क्रमशः 18.72% और 15.16% की वृद्धि दर्शाई है ।

डॉ.जयतिलक ने कहा कि जलकृषि में वृद्धि, प्रसंस्करण क्षमता में बढ़ोतरी और अनुकूल बाजार स्थितियों के कारण चालू वित्तीय वर्ष के दौरान निर्यात लाभ 6 अरब अमेरिकी डॉलर से आगे बढने की संभावना है ।

उन्होंने आगे कहा, " यदि हम उत्पादन और मूल्य वर्धन के प्रयासों को बनाए रखने में सक्षम हैं तो भारत कुछ वर्षों के भीतर नॉर्वे, वियतनाम, अमेरिका या थाईलैंड जैसे श्रेष्ठ देशों को पार करते हुए चीन के बाद समुद्री खाद्य में दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक

बन सकता है " ।

इस समारोह की अध्यक्षता करने वाले गोवा के कृषि मंत्री श्री विजय सरदेसाई ने अति खपत को एक बड़ी चिंता का कारण बताया और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को प्रभावित करने वाले 'मत्स्य अकाल' जैसी परिस्थितियों से बचने के लिए सक्रिय उपाय करने को कहा।

उन्होंने कहा, 'एक छोटे, प्रगतिशील राज्य के रूप में, गोवा ने मत्स्यन के तरीके को नुकसान पहुंचाने वाले एलईडी रोशनी पर प्रतिबंध लगाने जैसे सख्त कदम उठाए हैं, लेकिन यदि हम निरंतर निर्यात करना चाहते हैं, तो बड़े राज्यों को भी थोड़ा सा प्रयास करने की जरूरत है'।

श्री विनोद पालिएंकर, मत्स्य पालन एवं जल संसाधन मंत्री, ने कहा कि वे गोवा में एक मत्स्य पालन निगम स्थापित करने की योजना बना रहे हैं ताकि निर्यात में वृद्धि के साथ घरेलू उपभोक्ताओं को उचित कीमतों पर मछली उपलब्ध करना जैसे दोहरे लक्ष्य को सुनिश्चित किया जा सके ।

आईआईएसएस 2018 में भारत और अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, चीन, वियतनाम, दक्षिण कोरिया, थाईलैंड, मलेशिया और मध्य पूर्व देशों से निर्यातकों, मशीनरी सप्लायरों, आयातकों, अन्य सेवा प्रदाताओं, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं आदि ने भाग लिया ।

सीओओपी के साथ भागीदारी

आईआईएसएस 2018 में समुद्री उद्योग के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण पहल, यूरोपीय संघ के बाजार के लिए जैविक श्रिम्प उत्पादन करने के लिए भारत में किसानों और उद्यमियों को सुसज्जित करने हेतु स्विट्जरलैंड की सबसे बड़ी खुदरा और थोक कंपनियों में से एक, सीओओपी सहकारी समिति के साथ सहयोग का ज्ञापन बनाना था।

एमओसी पर एमपीईडीए के अध्यक्ष डॉ.ए जयतिलक और सीओओपी के प्रबंधन सदस्य, श्री जेरार्ड ज़्यूरलटर द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

परियोजना के तहत, एमपीईडीए, उद्यमियों की पहचान करने और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले जैविक श्रिम्प के उत्पादन पर तकनीकी सलाह प्रदान करने में सहायता करेंगे जो कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रमाणन प्रोटोकॉल से मिलते हैं।

पायलट प्रोजेक्ट, केरल में लगभग 1000 हेक्टर क्षेत्र में जैविक ब्लैक टाइगर श्रिम्प (पेनीस मोनोडोन) का उत्पादन करने के लिए चलाया जाएगा, और यदि सफल हुआ, तो संपूर्ण भारत में अन्य स्थानों पर विस्तारित किया जाएगा।

एमपीईडीए और सीओओपी जैविक श्रिम्प बीज के उत्पादन के लिए एक श्रिम्प हैचरी के प्रमाणीकरण की सुविधा प्रदान करेगा और इसी तरह परियोजना के लिए जैविक चारा स्रोत के लिए एक छोटे पैमाने पर फीड मिल यूनिट को प्रमाणित और सूचीबद्ध करेगा।

यह भारत में जलकृषि के लिए एक नई दिशा देगा, जो कि भारतीय समुद्री खाद्य निर्यात का मुख्य आधार -स्तंभ ही नहीं , बल्कि बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करके अन्य तरीकों से अर्थव्यवस्था को भी सहायता करेगा और देशीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए खाद्य मत्स्य में वृद्धि के लिए खारा बंजर भूमि और अंतर्देशीय संसाधनों का इस्तेमाल करेगा ।

पुरस्कार

श्री सुरेश प्रभु जी ने 21 वीं आईआईएसएस के उद्घाटन दिवस पर वर्ष 2015-16 और 2016-17 के लिए निर्यात उत्कृष्टता के लिए एमपीईडीए

पुरस्कार प्रदान किए।

एमपीईडीए उन कंपनियों को वार्षिक पुरस्कार प्रदान करता है जिन्होंने गहन समुद्र में मत्स्यन, चिरस्थायी जलकृषि, अनुपालन और प्रशिक्षण सहित कई श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन दर्ज किए हैं।

केन्द्र मंत्री द्वारा कुल 27 कंपनियों को वर्ष 2015-16 और वर्ष 2016-17 के लिए इस समारोह में निष्पादन पुरस्कार प्रदान किए गए जिसमें गोवा के कृषि मंत्री श्री विजय सरदेसाई और मत्स्य पालन

एवं जल संसाधन मंत्री श्री विनोद पालिएंकर और एमपीईडीए के सदस्य और सांसद श्री हरि बाबू आदि उपस्थित थे । प्रदर्शनी के अंतिम दिन, 29 जनवरी को कई श्रेणियों के तहत आईआईएसएस 2018 पुरस्कार वितरित किए गए।

आईआईएसएस 2020

सम्मेलन में यह घोषणा की गई कि आईआईएसएस के 22 वें संस्करण का आयोजन वर्ष 2020 में कोच्ची में किया जाएगा।

तकनीकी सत्र

आईआईएसएस 2018 के दौरान आयोजित तीन दिनों के तकनीकी सत्रों में, समुद्री खाद्य उद्योग के हितधारकों, नीति निर्माताओं और अन्य विशेषज्ञों ने कई विषयों पर चर्चा की। इसमें निर्यातकों को जीएसटी के तत्वों पर स्पष्टता की आवश्यकता, विनियमों और प्रमाणीकरण का सरलीकरण, असूचीयन (डिलिस्टिंग) मुद्दों और अन्य संबंधित प्रश्न उठाने के लिए मंच प्रदान किया गया।

एक सत्र के दौरान, भारतीय समुद्री खाद्य उद्योग के हितधारकों ने व्यापार में विश्वसनीयता बनाए रखने हेतु कई प्रमाणपत्र प्राप्त करने में लगने वाले प्रयत्न और लागत के बोझ को दूर करने के लिए एक सामान्य मानक प्रमाणीकरण की आवश्यकता के लिए आवाज उठाई।

हालांकि, कई लोगों ने स्वीकार किया कि अंत उपभोक्ताओं के लिए प्रमाणीकरण एक आवश्यक आश्वासन था। चंद्राजीत, निदेशक, विम्पी लैबोरेटरीज, कुवैत ने कहा, 'प्रमाणन न केवल गुणवत्ता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, बल्कि ब्रैंड जागरूकता सुनिश्चित करता है, जो कंपनी के लिए कई सकारात्मक परिणाम ला सकता है, जैसे बेहतर ग्राहक संबंध, कीमतों में वृद्धि आदि।'

जापान फिशरीज असोसिएशन के प्रबंध निदेशक सीनियर कार्यकारी, श्री योशीयुकी शिगे ने एक अलग सत्र में पर्यावरण-लेबलिंग के महत्व के बारे में बताया।

श्री शिगे ने आगे सूचित करते हुए कहा कि लेबल का उद्देश्य मत्स्य उत्पादकों को उनके उत्पादों को बढ़ावा देने के द्वारा उनके संरक्षण प्रयासों का समर्थन करना है। भविष्य में चिरस्थायी मत्स्यन सुनिश्चित करने के लिए उनके प्रयास आवश्यक हैं।

समुद्री उत्पादों के संसाधन और निर्यात के विभिन्न पहलुओं से निपटने वाले तकनीकी सत्र

में भाग लेते हुए, उन्होंने कहा कि वे केंद्रीय और राज्य स्तर के विविध करों का विलयन होकर एक जीएसटी बनने से खुश हैं। फिर भी, उन्हें नई कर व्यवस्था की बारीकियों को समझना मुश्किल लग रहा था। कर वापसी की प्रक्रिया को स्पष्ट और सरलीकृत

कर दिया गया था, परंतु इस उद्देश्य के लिए कोई समयसीमा न होने के कारण निर्यातकों को अभी तक धन की प्रतिपूर्ति नहीं हुई है ।

नित्ती विश्वविद्यालय, मंगलुरु के वरिष्ठ निदेशक (अंतरराष्ट्रीय संबंध) डॉ.आई.करुणासागर ने प्रमुख बाजारों में समुद्री खाद्य सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं की समीक्षा की।

अपोलो एक्वेरियम,सिंगापुर के मुख्य परिचालन अधिकारी, श्री लीम मेन्ग हुआट ने कहा कि अंतर राष्ट्रीय बाजार में जीवित खाद्य श्रिम्प और मछली की मांग बढ़ रही है जिससे समुद्री उत्पादों के जीवित परिवहन के लिए नवीनतम तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता होगी ।

आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के महत्वपूर्ण तथ्य

आधिकारिक वेबसाइट	-	www.ap.gov.in
स्थापना का दिन	-	1 नवंबर, 1956
क्षेत्रफल	-	160,205 वर्ग किमी
जनसंख्या	-	(2011)49,386,799
जिला	-	13
राजधानी	-	हैदराबाद (विजयवाड़ा क्षेत्र आंध्र प्रदेश की प्रस्तावित राजधानी है)
नदियाँ	-	गोदावरी, कृष्णा, वैनगंगा, तुंगभद्रा, पेन्नेर, स्वर्णमुखी आदि
वन एवं राष्ट्रीय उद्यान	-	नागार्जुनसागर - श्रीशैलम वन्यजीव अभयारण्य
भाषाएँ	-	तेलुगू, उर्दू, हिंदी, अंग्रेजी, कन्नड़, उड़िया और तमिल।
राजकीय पशु	-	कृष्णमृग
राजकीय पक्षी	-	नीलकंठ
राजकीय वृक्ष	-	नीम
राजकीय फूल	-	जल लिली

आंध्र प्रदेश के बारे में

आंध्र प्रदेश भारत के दक्षिण पूर्वी तटीय क्षेत्र में एक राज्य है।

यहां का मौसम अक्सर गर्म और नम रहता है। आंध्र प्रदेश का बंटवारा हो गया है और अब

उसमें से तेलंगाना नाम का राज्य बना दिया गया है। तेलंगाना के गठन हेतु फरवरी 2014 में आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम 2014 बिल पास हुआ और उत्तर पश्चिमी आंध्र प्रदेश से 10 जिले तेलंगाना में चले गए। राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद 2 जून 2014 को भारत के 29 वें राज्य के रूप में तेलंगाना अस्तित्व में आया। अगले दस सालों के लिए हैदराबाद को दोनों राज्यों की राजधानी घोषित किया गया, हालांकि आंध्र प्रदेश की सरकार ने राज्य के लिए विजयवाड़ा क्षेत्र में एक नई राजधानी का प्रस्ताव रखा है।

अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचा

कृषि आंध्र प्रदेश की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्रोत है। राज्य की लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि से जुड़ी है और यह भारत में चावल के उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र है।

भारत में दो प्रकार की जल कृषि का प्रयोग

किया जाता है, ये है ताजा (मीठा) जल जलकृषि तथा खारा जल जलकृषि।

खारा जल जलकृषि में समुद्र में रहने वाली मछलियों का प्रजनन शामिल है जैसे सीबॉस, ग्रे मलेट, टाइगर श्रिम्प तथा मड क्रैब। इसका प्रयोग पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, केरल तथा गोवा जैसे राज्यों में किया जाता है। मत्स्य कृषक मछलियों के भोजन के लिए आयल केक (खली), चावल की भूसी, स्थानीय रूप में उपलब्ध केंचुए, क्लैम या मसेल मीट (मांस) तथा भैंस के मांस के मिश्रण का प्रयोग करते हैं। इस मिश्रण को छोटी छोटी गोलियां बनाने के लिए टेपियोका पेस्ट के साथ मिलाया जाता है जिन्हें फिर चिह्नांकित पोषण स्थलों पर मिट्टी के कटोरों में रख दिया जाता हैं।

तटीय जलकृषि तथा ताजा (मीठा) जल कृषि में आंध्र प्रदेश का स्थान प्रथम हैं। ताजा (मीठा) जल मत्स्य उत्पादन तथा मत्स्य/प्रॉन (झींगा) उत्पादन के समग्र मूल्य की दृष्टि से यह दूसरे स्थान पर हैं। आंध्र प्रदेश का देश के कुल समुद्री निर्यातों में लगभग 40 प्रतिशत का योगदान हैं। अंतर्देशीय संसाधनों में 102 जलाशय शामिल हैं। जिनमें 7 विशाल जलाशय है, 26 मध्यम आकार के जलाशय है तथा 69 छोटे जलाशय हैं। यहां दो झीलें हैं कोलेरू झील जो मीठे जल की झील है तथा पुलीकेट झील जो खारे जल की झील है। जल कृषि के लिए 74000 पारिवार्षिक (बारहमासी), मौसमी तथा दीर्घ मौसमी टैंक, मत्स्यतालान तथा मीठे जल के प्रॉन (झींगा) तालाब भी आंध्र प्रदेश में विद्यमान हैं। खारे जल के ससांधनों के श्रिंप संवर्धन के लिए 0.78 लाख हेक्टेयर, 974 कि.मी. की तटीय रेखा तथा 508 मत्स्यपालन ग्राम शामिल हैं।

समाज, कला और संस्कृति

आंध्र प्रदेश की 85 प्रतिशत से ज्यादा आबादी तेलगु बोलती है। यहां के दक्षिणी क्षेत्र में तमिल भी काफी बोली जाती है और कर्नाटक की सीमा पर कन्नड़ बोलने वाले लोग भी हैं। हैदराबाद में उर्दू बोलने वाले बड़ी संख्या में हैं और इनकी आबादी राज्य की जनसंख्या का 7 % हैं।

आंध्र प्रदेश की आधिकारिक भाषा तेलगु है जिसे पहले तेनुगु कहा जाता था। राज्य की दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा उर्दू है, इसलिए इसे आंध्र प्रदेश में सह आधिकारिक भाषा का दर्जा मिला है। हिन्दी, अंग्रेजी और बंजारा राज्य में बोली जाने वाली कुछ अन्य प्रमुख भाषाएं हैं। तेलगु विश्व की 15 वीं सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है और भारत में हिन्दी के बाद इसका स्थान तीसरा है। यह संस्कृत भाषा से प्रभावित है और इसे एक शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया है।

आंध्र प्रदेश में पर्यटन

आंध्र प्रदेश में कई मंदिर और ऐतिहासिक स्मारक हैं। चित्तूर जिले का तिरुप्पति मंदिर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह वेंकेटेश्वर भगवान का मंदिर है। तिरुमला की पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना माना जाता है। राजधानी हैदराबाद यहां पर पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण है। यह राजधानी दरअसल दो शहरों हैदराबाद और सिकंदराबाद का जोड़ है और हुसैन सागर झील इन शहरों को जोड़ती है। यहां की देखने लायक जो अन्य जगहें हैं वो सन् 1591 में बना चारमीनार, उस्मानिया विश्वविद्यालय, राज्य संग्रहालय और कला वीथिका, स्वास्थ्य संग्रहालय, पब्लिक गार्डन, बिड़ला मंदिर और मक्का मस्जिद।

कारगिल द्वारा भारत में पहला मत्स्य चारा संयंत्र का प्रारम्भ

विजयवाड़ा - इस वर्ष भारत के मत्स्य कृषकों ने उच्च गुणवत्ता वाले चारे तक पहुंच बढ़ा दी है, क्योंकि ***कारगिल*** देश में मत्स्य प्रजातियों को समर्पित अपना पहला चारा मिल खोल रहा है। विजयवाड़ा शहर में स्थित और मुलपुरी फूड्स एंड फीड्स से अधिग्रहित मिल, किसानों को सुरक्षित, उच्च गुणवत्ता वाले एक्वा फ़ीड सोल्यूशन प्रदान करने के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है । यह भारत और पूरे एशिया में अपने एक्वा फीड

बिजनेस को विकसित करने के कारगिल के काम में एक महत्वपूर्ण पहल भी चिह्नित करता है ।

यह संयंत्र भारत में फार्म परिपोषित जलकृषि की राजधानी माने जाने वाले आंध्र प्रदेश में स्थित है एवं तिलापिया और अन्य गर्म पानी की प्रजातियों के लिए मत्स्य चारा उत्पादों का उत्पादन करती है । संप्रति, क्षेत्र के टोल मिलर्स के साथ ***कारगिल*** काम करता है तथा प्रति वर्ष करीब 30,000 टन मत्स्य चारे का विक्रय करता है । प्रति वर्ष 90,000 टन की क्षमता वाला यह नया संयंत्र, ***कारगिल*** को इस क्षेत्र में ग्राहकों की बेहतर सेवा के लिए भारत को अपना मत्स्य चारा क्षमता तिगुना करने में सक्षम बनाता है।

दक्षिण एशिया में कारगिल एक्वा पोषण के प्रबंध निदेशक चाड गौगर ने कहा कि " यह एक जीवंत बाजार है और हम आंध्र, तमिलनाडु, उड़ीसा और बंगाल के कृषकों की बेहतर सेवा करने के लिए उत्साहित हैं, । चूंकि देश जल्द ही दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला बन जाएगा, इसलिए नई सुविधा हमें उनकी मांग को बेहतर ढंग से पूरा करने का अवसर प्रदान करती है।

कारगिल ने संयंत्र के उद्घाटन में 10 मिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक का निवेश किया, जो इस क्षेत्र में लगभग 200 नौकरियां उपलब्ध कराता है ।

कारगिल एक्वा पोषण के अध्यक्ष इयनर वाथने ने कहा कि "भारत कारगिल के लिए बड़े अवसर प्रदान करता है और एशिया में हमारे एक्वा पोषण विकास रणनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है '। 'संयंत्र ***कारगिल*** की औद्योगिक और आपूर्ति श्रृंखला क्षमताओं का लाभ उठाता है। हमारी नवाचार विशेषज्ञता ग्राहकों को स्वस्थ समुद्री खाद्य पैदा करने और उनके उत्पादन में वृद्धि करने में मदद करने केलिए सर्वोत्तम संभाव्य फ़ीड सोल्यूशन प्रदान करते हैं। '

नया चारा संयंत्र भारत में एक्वा पोषण मत्स्य चारा उत्पादों के ***कारगिल*** के ईडब्ल्यूओएस ब्रांड की शुरूआत को चिह्नित करता है।

हिन्दी पखवाड़ा 2017 का आयोजन

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण में दिनांक 31.08.2017 से 14.09.2017 तक हिंदी पखवाडा समारोह का आयोजन किया गया । इस दौरान प्राधिकरण के अधिकारियों/ कर्मचारियों, स्कूल के बच्चों, एमपीईडीए के अधिकारियों /कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिन्दी में कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं । हिन्दी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को दिनांक 02.11.2017 को आयोजित राजभाषा समागम के दौरान पुरस्कार वितरित किए गए

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के सिलसिले में प्राधिकरण के अधिकारियों /कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची :

हिन्दी टिप्पण, आलेखन एवं अनुवाद

1. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्त निदेशक (वि.) - प्रथम
2. श्री के.वी.प्रसन्न कुमार, कनिष्ठ लिपिक - द्वितीय
3. श्रीमती मुहम्मद खमर जहां, क.तकनीकी अधिकारी - तृतीय

हिन्दी टंकण

1. श्री के.वी.प्रसन्न कुमार, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्रीमती गंगा एस.के, वरिष्ठ आशुलिपिक - द्वितीय
3. श्रीमती मुहम्मद खमर जहां, क.तकनीकी अधिकारी - तृतीय

हिन्दी सारलेखन

1. श्रीमती अंजू. सहायक निदेशक (वि.से) - प्रथम
2. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्त निदेशक (वि.) - द्वितीय
3. श्री जी राजेन्द्रन, उप निदेशक (का.) - तृतीय

हिन्दी समाचार वाचन

1. श्री के.वी.प्रसन्न कुमार, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्री एस भूषण पाटील, सहायक निदेशक (सांख्यिकी) - द्वितीय
3. श्रीमती नीनू पीटर, सहायक निदेशक (अक्वा) - तृतीय

हिन्दी कविता पाठ

1. श्री एस भूषण पाटील, सहायक निदेशक (सांख्यिकी) - प्रथम
2. श्रीमती अंजू. सहायक निदेशक (वि.से) - द्वितीय
3. श्री वी.वी.सुरेश कुमार, सहायक निदेशक (का.) - तृतीय

हिन्दी गीत

1. डॉ राम मोहन.एम.के, संयुक्त निदेशक (वि.) - प्रथम
2. श्री एस भूषण पाटील, सहायक निदेशक (सांख्यिकी) - द्वितीय
3. कुमारी सरिता.एम.एम, वरिष्ठ लिपिक - तृतीय

हिंदी प्रश्नोत्तरी

1. श्री एस भूषण पाटील, सहायक निदेशक (सांख्यिकी) एवं श्री चोक्कलिंगम, कनिष्ठ लिपिक - प्रथम
2. श्री प्रसाद नायिक रामावत, कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी एवं कुमारी अखिला.जे, कनिष्ठ आशुलिपिक - द्वितीय

3.	श्री प्रसन्न कुमार, कनिष्ठ लिपिक एवं श्री श्रीभरत, कनिष्ठ लिपिक	-	तृतीय

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के सिलसिले में प्राधिकरण के अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची:

हिन्दी कविता पाठ (I-III)

1.	मास्टर श्रीराम सुपुत्र श्रीमती चित्रा.जे.आर, वरिष्ठ लिपिक	-	प्रथम
3.	कुमारी नीती श्रीवास्तव सुपुत्री श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा)	-	द्वितीय
4.	मास्टर कार्तिक सुपुत्र श्रीमती गंगा.के.एस, वरिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय

हिन्दी कहानी कथन (I-III)

1.	कुमारी नीती श्रीवास्तव सुपुत्री श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा)	-	प्रथम
2.	मास्टर श्रीराम सुपुत्र श्रीमती चित्रा.जे.आर, वरिष्ठ लिपिक	-	द्वितीय

हिन्दी गीत (IV-VII)

1.	कुमारी मरिया मोफिन सुपुत्री श्रीमती फिलोमिना विनीता, वरिष्ठ लिपिक	-	प्रथम
2.	कुमारी अभिश्रेया सुपुत्री श्रीमती वीणा.के.पी, लेखा सहायक, क्षेत्रीय प्रभाग, कोच्ची	-	द्वितीय
3.	मास्टर विशाल कृष्णा, सुपुत्र श्रीमती सुमना मोल, कनिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय

हिन्दी समाचार वाचन (IV-VII)

1.	मास्टर निर्णय कुमार सुपुत्र श्री हिमांशु श्रीवास्तव, उप निदेशक (रा.भा)	-	प्रथम
2.	कुमारी मरिया मोफिन सुपुत्री श्रीमती फिलोमिना विनीता, वरिष्ठ लिपिक	-	द्वितीय
3.	मास्टर विशाल कृष्णा, सुपुत्र श्रीमती सुमना मोल, कनिष्ठ आशुलिपिक	-	तृतीय

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के सिलसिले में स्कूल के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की सूची:

ललित गान

1.	कुमारी भावना जयकुमार टोक-एच पब्लिक स्कूल, वैटिला	-	प्रथम
2.	कुमारी अमृत लक्ष्मी पौधार भवन्स आदर्श विद्यालय, काक्कनाड	-	द्वितीय

3. कुमारी शरण्या परमेश्वरन - तृतीय
भवन्स विद्यामंदिर, एरूर

हिन्दी आशुभाषण

1. कुमारी नमिता रेचल षेरी - प्रथम
भवन्स आदर्श विद्यालय, काक्कनाड
2. कुमारी निया सूसन चाली - द्वितीय
राजगिरी पब्लिक स्कूल, कलमश्शेरी
3. कुमारी इषा ए पै - तृतीय
भवन्स विद्यामंदिर, गिरिनगर

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के सिलसिले में प्राधिकरण के अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता:

हिन्दी पखवाड़ा 2017 के सिलसिले में प्राधिकरण के अधिकारियों/ कर्मचारियों के बच्चों एवं स्कूल के बच्चों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता:

भागीदारी शिखर सम्मेलन, 2018, विशाखापट्टनम

जलकृषक नामांकन पंजीकरण कार्ड लॉन्च समारोह

एमपीईडीए देश में निर्यात उन्मुख जलकृषि खेतों के लिए डेटाबेस बना रहा है, जिसमें श्रिम्प और अन्य निर्यात किए जानेवाले मत्स्य और शेल मत्स्य के उत्पादन में प्रवृत्त सभी खेतों को नामांकित करने की प्रक्रिया है । एमपीईडीए अधिनियम और नियम 1972 के नियम 32 (अध्याय- VI अतिरिक्त कार्य) के उप नियम (डी) और (i) के तहत निहित अधिकारों का प्रयोग करते हुए, एमपीईडीए ने युनिक क्यूआर कोडित खेत नामांकन कार्ड जारी करने का प्रस्ताव दिया है। नामांकन कार्ड जारी करने की योजना में प्रत्येक निर्यात उन्मुख जलकृषि के लिए एक युनिक पहचान संख्या निर्दिष्ट करना शामिल है जो नामांकन की प्रक्रिया के माध्यम से कृषि के डेटाबेस के नामांकन और निर्माण के लिए एमपीईडीए से संपर्क करते हैं। इसका उद्देश्य ट्रेसीबिलिटी प्रणाली को लागू करना और गुणवत्ता नियंत्रण की निगरानी करना है।

इसके आधार पर, 25/02/2018 को एमपीईडीए ने सीआईआई भागीदारी शिखर सम्मेलन, 2018 विशाखापट्टनम, में युनिक क्यूआर कोडित जलकृषि फार्म नामांकन कार्ड लॉंच किया। माननीय केन्द्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु और आंध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन.चन्द्राबाबू नायडू ने सम्मानित स्वास्थ्य मंत्री, आंध्र प्रदेश सरकार, श्री. के श्रीनिवास, माननीय सांसद सदस्य, श्री हरि बाबू, एमपीईडीए के माननीय अध्यक्ष, डॉ.ए.जयतिलक और एमपीईडीए के माननीय सचिव श्री.बी.श्रीकुमार की उपस्थिति में कार्ड का औपचारिक रूप से लांच किया। कुल 5 जलकृषि किसान; श्रीमती पार्वती कुमारी, श्री वी.वेंकटेश्वर राव, श्री.के.वी.एस.के.मूर्ति राजू, श्री.जी.वेणुप्रसाद और श्री.जी.सुरेश को नामांकन कार्ड प्रस्तुत किए गए । इस बैठक में आंध्र प्रदेश के विभिन्न जिलों के 50 जलकृषि किसानों ने भी दर्शक के रूप में भाग लिया।

कार्ड में बुनियादी फार्म की जानकारी क्यूआर कोड के रूप में है। लगभग 1, 95,994 हेक्टर में श्रिम्प संवर्धन के अंतर्गत अनुमानित 100,000 खेत समाविष्ट है। केवल आंध्र प्रदेश में ही 75,000 में समाविष्ट, 65,000 से अधिक किसान, 9 तटीय जिलों में नामांकित हैं।

एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विशाखापट्टनम

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एमपीईडीए) की स्थापना 1972 के दौरान संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। सितंबर 1961 में भारत सरकार द्वारा स्थापित भूतपूर्व समुद्री उत्पाद निर्यात संवर्धन परिषद को 24 अगस्त 1972 को एमपीईडीए में मिलाया गया था।

एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विशाखापट्टनम निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करते हैं:

पंजीकरण:

एमपीईडीए अधिनियम 1972 की धारा 9 (2) (बी) और (एच) के तहत निर्यातकों, मत्स्यन पोतों और अन्य प्रसंस्करण संस्थाओं का पंजीकरण एमपीईडीए के सांविधिक कार्यों में से एक है।

निर्यातक

एमपीईडीए अधिनियम 1972 की धारा 9 (2) (एच) के तहत एक निर्यातक के रूप में पंजीकरण एमपीईडीए नियमों, 1972 के नियम 40-42 के साथ पठित है। निर्यातकों को चार में श्रेणीबद्ध किया जाता है,

1. ***निर्माता निर्यातक*** - एक अनुमोदित प्रसंस्करण संयंत्र, या जहाज पर प्रसंस्करण सुविधाओं वाला एक अनुमोदित मत्स्यन पोत या जीवित मत्स्य हैंडलिंग सुविधा या शीतित मत्स्य हैंडलिंग सुविधा या सूखे मत्स्य हैंडलिंग सुविधा का मालिक है ।
2. ***व्यापारी निर्यातक*** - यह एक निर्यातक है जो प्रसंस्करण संयंत्र का मालिक नहीं है, बल्कि एक अनुमोदित प्रसंस्करण या हैंडलिंग सुविधा की अतिरिक्त क्षमता का उपयोग करता है।
3. ***रूट थ्रु व्यापारी निर्यातक*** - एक निर्यात हाउस या ट्रेडिंग हाउस या स्टार ट्रेडिंग हाउस या सूपर स्टार ट्रेडिंग हाउस है, जो डीजीएफटी द्वारा जारी अनुमोदन के प्रमाणपत्र का स्वामित्व रखता है।
4. ***आलंकारिक मत्स्य निर्यातक*** - एक निर्यातक जो केवल आलंकारिक मत्स्य निर्यात करता है लेकिन मानव उपभोग के लिए जीवित समुद्री उत्पादों का निर्यातक नहीं हैं।

पंजीकरण के लिए प्रक्रिया

1. ***निर्माता निर्यातक :*** समुद्री उत्पादों के निर्यातक के रूप में पंजीकरण के लिए प्रत्येक आवेदन को सचिव या अन्य अधिकारी को प्राधिकृत के कार्यालयों से रुपए 200/- नकद या एमओ / डीडी / पीओ द्वारा प्राधिकरण के पक्ष में आहरित भुगतान पर फॉर्म IX प्राप्त किया जाएगा और आवेदन पत्र (फॉर्म IX) में दर्शाए गए संलग्नक की सूची के साथ प्रस्तुत किया जाएगा।

   एक निर्यातक के रूप में पंजीकरण के लिए हर आवेदन के साथ रुपये 5000/- शुल्क भी दिया जाएगा ।तीन प्रतियों में आवेदन संबंधित पंजीकरण अधिकारी के पास जमा करना होगा जिसके अधीन पंजीकृत या आवेदक का मुख्य कार्यालय स्थित है। निम्नलिखित दस्तावेजों के साथ आवेदन रु.5000/- आवेदन शुल्क के साथ जमा किया जाएगा -:

1. आवेदक के पासपोर्ट आकार की तस्वीर
2. पते का प्रमाण

3. प्रसंस्करण संयंत्र और हैंडलिंग सुविधा की अधिशेष क्षमता के उपयोग के लिए लिखित समझौते की प्रतिलिपि।
4. प्रसंस्करण संयंत्र और हैंडलिंग सुविधा के मालिक द्वारा मूल संयुक्त उपक्रम ।
5. प्रसंस्करण संयंत्र और हैंडलिंग सुविधा का मूल पंजीकरण प्रमाणपत्र ।
6. पृष्ठांकन के लिए भंडारगृह का मूल पंजीकरण प्रमाणपत्र ।
7. पृष्ठांकन के लिए शुल्क ।
8. अनुसूचित बैंक का वित्तीय प्रमाण दिखाने वाला प्रमाणपत्र
9. डीजीएफटी द्वारा जारी किए गए आयातक निर्यातक कोड (आईईसी) प्रमाणपत्र की प्रति ।
10. रु.5000/- पंजीकरण शुल्क ।
11. खरीद आदेश की प्रति ।

2. *व्यापारी निर्यातक*

व्यापारी निर्यातक एक ऐसा निर्यातक है जो एक प्रसंस्करण संयंत्र या हैंडलिंग सुविधा का मालिक नहीं है या ना उसका संचालन करता है, लेकिन प्रसंस्करण संयंत्र या हैंडलिंग सुविधा की अधिशेष क्षमता का उपयोग करता है और जिसका नाम हैंडलिंग सुविधा के पंजीकरण प्रमाण पत्र पर पृष्ठांकित किया गया है।

क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय कार्यालय नए व्यापारी निर्यातकों को पंजीकृत नहीं करेंगे। सभी मामलों में आवेदन और समर्थन करने वाले दस्तावेजों को आगे की कार्रवाई के लिए ऑनलाइन द्वारा मुख्यालय भेजा जाएगा।

बैंक गारंटी: - शीतित समुद्री उत्पादों के नए व्यापारी निर्यातक को दायित्व को लागू करने और गुणवत्ता शिकायतों और व्यापार विवादों के मामलों में निपटान के उपलक्ष्य में 5 वर्ष की अवधि के लिए 15 लाख रुपये की बैंक गारंटी प्रदान करनी होगी।

यदि व्यापारी निर्यातक ने समय से पूर्व, पहले करार को समाप्त कर दिया है, तो उसे दूसरा करार बनाने के लिए केवल एक और मौका दिया जाएगा।

निर्यातक पंजीकरण प्राप्त करने के लिए व्यापारी निर्यातक दिशानिर्देशों में दर्शायी गयी निम्नलिखित शर्तों को पूरा करेगा :

1. एक व्यापारी निर्यातक,निर्यातक के रूप में जारी किए गए पंजीकरण प्रमाणपत्र में प्रसंस्करण संयंत्र / हैंडलिंग सुविधा का नाम और संख्या और भंडारगृह सूचित करेगा, जिसमें उत्पादन से केवल धारक को निर्यात करने की अनुमति है।
2. प्रसंस्करण संयंत्र या हैंडलिंग सुविधा की अधिशेष क्षमता का उपयोग करने वाले व्यापारी निर्यातक का नाम और संख्या प्रसंस्करण संयंत्र / हैंडलिंग सुविधा और भंडारगृह के प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकित किया जाएगा।
3. व्यापारी निर्यातक प्रसंस्करण संयंत्र या हैंडलिंग सुविधा के मालिक के साथ एक नियमित लिखित करार बनाएगा।

3. *रूट थ्रू व्यापारी निर्यातक*

रूट थ्रू व्यापारी निर्यातक विदेश व्यापार के महानिदेशक द्वारा अनुमोदित एक एक्सपोर्ट हाउस, ट्रेडिंग हाउस, स्टार ट्रेडिंग हाउस या सूपर स्टार ट्रेडिंग हाउस है।

क्षेत्रीय / उप-क्षेत्रीय कार्यालय पंजीकरण के आवेदन के सत्यापन के लिए जॉंच सूची को विधिवत रूप से भरने के बाद, रूट थ्रू व्यापारी निर्यातक प्रमाणपत्र ऑनलाइन जारी कर सकते हैं, जिनके

पास डीजीएफटी द्वारा जारी फर्म की स्थिति को दर्शाता एक एक्सपोर्ट हाउस या ट्रेडिंग हाउस या स्टार ट्रेडिंग हाउस या सूपर स्टार ट्रेडिंग हाउस अनुमोदन का प्रमाणपत्र है ।

आलंकारिक मत्स्य निर्यातक

आलंकारिक मत्स्य निर्यातक आलंकारिक मत्स्य और जलीय पौधों के निर्यातक हैं।

मात्स्यिकी यान

मात्स्यिकी यान का अर्थ है जहाज़ या नाव प्रणोदन के यांत्रिक माध्यम से सुसज्जित होता है जो विशेष रूप से फायदे के लिए समुद्री मत्स्यन में व्यस्त हैं । 15 फरवरी, 2007 की अधिसूचना के अनुसार, वाणिज्य विभाग, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने निम्नलिखित परिभाषा अन्तर्निविष्ट की है अर्थात :

1. **'फ्रीजर यानों'** का मतलब है इन यानों में जहाँ मत्स्य उत्पादों को जमीं पर आगे की प्रक्रिया और पैकिंग के लिए शीतित और संग्रहित किया जाता है।

2. **'मात्स्यिकी जहाज'** का अर्थ मत्स्यन की गतिविधियों में व्यस्त यान जहां मत्स्य उत्पादों को जमीन पर आगे की प्रक्रिया, फ्रीज़िंग और पैकिंग के लिए इष्टतम स्थितियों में संग्रहित किया जाता है।

तीन प्रतियाँ में आवेदन फॉर्म- I और डुप्लिकेट में (ए) विधिवत रूप से भरकर जहाज के डेक क्षेत्र दिखाए जाने वाले लेआउट या नीले रंग की प्रिंट के साथ संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय को प्रस्तुत किया जाएगा ।

सेवाएं

पकड़ प्रमाणपत्र

विश्व में मत्स्य पालन में अवैध, अनियोजित और अनियमित (आईयूयू) मछली पकड़ने का मुद्दा गंभीर

चिंता का विषय है। आईयूयू मत्स्यन सभी पकड मत्स्यन में मत्स्य स्टॉक के संरक्षण और प्रबंधन के प्रयासों को कमजोर बना देता है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की अधिसूचना सं. 2/97/2009-ईआई और ईपी दिनांक 11.12.2009 द्वारा यूरोपीय संघ के नियमों 1005/2008 अनुसार समुद्री खाद्य के निर्यात के लिए कैच प्रमाणपत्र को मान्यता देने के लिए एमपीईडीए को नोडल एजेंसी के रूप में अधिसूचित किया है जिसे अवैध, अनियोजित और अनियमित (आईयूयू) मत्स्यन को प्रतिबंध, रोकने और खत्म करने के लिए नामित किया गया है। पकड प्रमाणीकरण आईयूयू विनियमन का एक अभिन्न अंग है जो यूरोपीय संघ के देशों में कारोबार किए जाने वाले सभी मत्स्य उत्पादों का पता लगाने में मदद करेगा । 1 जनवरी 2010 से पकड प्रमाणन व्यवस्था शुरू हुई और मार्च 2014 तक, सभी समुद्री राज्यों में स्थित हमारे क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से यूरोपीय संघ के निर्यात के लिए 38174 पकड़ प्रमाणपत्र प्रमाणित किए गए।

व्युत्पत्ति (सीओओ) प्रमाणपत्र

सीओओ एक स्वायत्त वाणिज्यिक नीति साधन है, जो देशों के बीच आर्थिक सहयोग विकसित करने के लिए आपसी व्यापार को बढ़ावा देने और बनाए रखने के लिए निर्देशित हैं।

15 मई, 2014 के सार्वजनिक नोटिस सं .59/2009-2014 (आरई-2013) के अनुसार,

निम्न दिए गए सभी एफटीए / पीटीए के तहत समुद्री उत्पाद के लिए व्युत्पत्ति प्रमाणपत्र जारी करने के लिए एमपीईडीए अधिकृत है।

अधिमानता (जीएसपी) की सामान्य प्रणाली

2.1 प्रस्तावना

2.1.1 अधिमानता की सामान्यीकृत व्यवस्था (जीएसपी) एक गैर-संविदात्मक साधन है, जिसके द्वारा औद्योगिक रूप से विकसित देशों ने विकासशील देशों में उत्पन्न सामानों के लिए प्रशुल्क में रियायत बढा दी है।

2.1.2 घोषित उद्देश्य विकासशील देशों की सहायता करना है:

क) उनकी निर्यात आय में वृद्धि करना

ख) उनके औद्योगीकरण को बढ़ावा देना और

ग) उनकी आर्थिक वृद्धि की दर में तेजी लाना ।

2.1.3 नई दिल्ली में आयोजित दूसरे युएनसीटीएडी सम्मेलन के दौरान मार्च 1968 में जीएसपी के अधीन सिद्धांतों को औपचारिक रूप से स्वीकार किया गया।

2.2 जीएसपी क्या है

परंपरागत रूप से, जीएसपी एक स्वायत्त वाणिज्यिक नीति साधन है, जो विकास के लिए निर्देशित है। यह सभी प्रशुल्क के अधिकांश उत्कृष्ट वाणिज्यिक नीति साधन पर आधारित है । इसका उद्देश्य विकासशील देशों को विकसित देशों के मुकाबले अधिक अधिमान प्रशुल्क की पेशकश करना है ताकि उनके निर्यात के लिए विकसित बाजार तक अधिक अनुकूल पहुंच सक्षम हो सके।

एक जनसाधारण के लिए जीएसपी विकासशील देशों (अधिमान प्राप्त करने वाले देशों) के लिए विकसित देशों (अधिमान देने वाले देशों) द्वारा विस्तारित अधिमान्य प्रशुल्क प्रणाली हैं।

इसमें भारत जैसे विकासशील देशों, विकसित देशों के बाजारों, यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों द्वारा निर्यात योग्य उत्पादों के एमएफएन प्रशुल्क या शुल्क मुक्त व्यवहार शामिल हैं। तथापि, एकपक्षीय और गैर-भेदभावपूर्ण को अधिमानता दी गई है।

एशिया पैसिफिक ट्रेड एग्रीमेंट (आप्ता)

4.1 प्रस्तावना

एशिया पैसिफ़िक ट्रेड एग्रीमेंट (आप्ता) एक अधिमान व्यापार व्यवस्था है जिसे उदारीकरण एवं एशिया और पैसिफिक क्षेत्र के लिए आर्थिक और सामाजिक आयोग (ईएससीएपी) क्षेत्र में प्रगतिशील रुप में वस्तुओं में व्यापार का विस्तार करने के लिए बनाया गया है। अब तक भारत, बांग्लादेश, कोरिया गणराज्य, श्रीलंका और चीन द्वारा करार कार्यान्वित किया गया है । एशिया पैसिफ़िक ट्रेड एग्रीमेंट (आप्ता) का नाम 1 सितंबर 2006 से बैंकॉक एग्रीमेंट (बीए) में परिवर्तन किया गया है। 31 जुलाई 1975 से बैंकॉक एग्रीमेंट प्रभावी था।

4.1.1 आप्ता के घोषित उद्देश्य हैं:

क) आपसी व्यापार को बढ़ावा देना और बनाए रखना और

ख) करार करने वाले देशों के बीच आर्थिक सहयोग विकसित करना;

4.2 व्युत्पत्ति के नियम

4.2.1 इन नियमों का उद्देश्य आप्ता के तहत अधिमान्य रियायतों के लिए पात्र उत्पादों की व्युत्पत्ति को निर्धारित करना है। उत्पाद, जिन्होंने 'भारत में उत्पन्न' स्थिति को प्राप्त किया है, सहभागी देशों के बीच आयात पर अधिमान्य प्रशुल्क व्यवहार के लिए पात्र हैं।

4.2.2 निम्नलिखित उत्पादों को भारत में प्रारंभिक रूप से उत्पन्न होनेवाला माना जाता है, यदि वे सीधे तौर पर किसी प्रतिभागी देश में भेजे जाते हैं।

क) जिन उत्पादों को भारत में पूरी तरह से प्राप्त किया गया है, जैसा कि 4.2.4 में नीचे परिभाषित किया गया है।

ख) भारत में प्राप्त उत्पाद, जिनमें से नीचे 4.2.4 में संदर्भित सामग्रियों के अलावा और सहभागी

देशों में उत्पन्न होने वाली सामग्रियों, गैर-प्रतिभागी देशों और / या अनिर्धारित मूल के सामानों से आयात की जाने वाली सामग्रियों का उपयोग भी किया जाता है, बशर्ते मूल्य गैर-प्रतिभागी देशों और/ या अनिर्धारित मूल की सामग्री से आयातित सामग्रियों का उत्पाद मूल्य एफ.ओ.बी.के 50% से अधिक न हो जो नीचे 4.2.5 विस्तृत स्थिति के अधीन हैं ।

4.2.3 4.2.2 (क) के उद्देश्य के लिए, गैर- उत्पन्न सामग्रियों के मूल्य का अर्थ है सी.आई.एफ. ऐसी सामग्रियों के आयात के समय मूल्य या, अगर यह मालूम नहीं है और निर्धारित और प्रमाणित नहीं किया जा सकता है तो भारत में सामग्रियों के लिए भुगतान किया जाने वाला पहला निश्चित मूल्य है।

4.2.4 उपरोक्त 4.2.2 (क) के अर्थ के अंतर्गत, भारत में पूरी तरह से प्राप्त के रूप में निम्नलिखित को माना जाता है।

(क) इसकी मिट्टी, इसके पानी या इसके समुद्री तल से निकाला गया कच्चा या खनिज उत्पाद 1

(ख) 2 वहाँ हार्वेस्ट किया हुआ कृषि उत्पाद ;

(ग) वहां पैदा और पाले हुए जीव;

(घ) उपरोक्त धारा (ग) में निर्दिष्ट जीवों से प्राप्त उत्पाद;

(ङ) वहाँ शिकार या मत्स्यन से प्राप्त उत्पाद;

(च) समुद्री मत्स्यन के उत्पाद और उसके यानों 3,4 द्वारा उच्च समुद्र से लिये गये अन्य समुद्री उत्पाद

(छ) उपरोक्त धारा (च) में उल्लिखित उत्पादों से विशेष रूप से प्रसंस्कृत उत्पादों और / या उसके फैक्टरी यानों 4, 5 के आँच पर बनाया गया उत्पाद;

(ज) वहां एकत्र की गयी सामग्री जो केवल कच्चे माल की वसूली के लिए उचित हैं;

(झ) वहाँ निर्माण संचालन के परिणामस्वरूप उत्पन्न अपशिष्ट और रद्दी माल;

(ट) उपरोक्त धाराओं (क) से (ट) तक में उल्लिखित उत्पादों से विशेष रूप से उत्पादित वस्तुएं

आरसीएमसी (पंजीकरण व सदस्यता प्रमाणपत्र:)

विदेश व्यापार नीति के अनुसार, पॉलिसी के तहत लाभ लेने के लिए निर्यातकों के लिए एक पंजीकरण-व-सदस्यता प्रमाणपत्र (आरसीएमसी) की आवश्यक है। प्रमाणपत्र रखने से निर्यातकों को सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क के संबंध में लाभ प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। पंजीकरण सहित सदस्यता प्रमाणपत्र (आरसीएमसी) निर्यात संवर्धन परिषद / कमोडिटी बोर्ड / विकास प्राधिकरण या एफ़टीपी या एचबीपी वॉल्यूम 1 में निर्धारित अन्य सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी किया जाता है।

समुद्री खाद्य के निर्यातकों के लिए आरसीएमसी जारी करने के अधिकार के रूप में एमपीईडीए को नामित किया गया है। एक निर्यातक के रूप में एमपीईडीए में पंजीकृत होने के बाद, निर्यातक पंजीकरण-सहित-सदस्यता प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए निर्धारित प्रारूप में आरसीएमसी के लिए आवेदन कर सकता है। आरसीएमसी का लाइसेंस वर्ष 1 अप्रैल से वैध माना जाएगा जिसमें यह जारी किया गया और लाइसेंस वर्ष 31 मार्च को समाप्त होने वाले पांच साल के लिए वैध होगा, जब तक कि अन्यथा निर्दिष्ट नहीं किया गया हो।

प्रत्याशित / संभाव्य निर्यातक भी आवेदन द्वारा रजिस्टर कर सकते है और ईपीसी के एक संबधी सदस्य बन सकते हैं।

एमपीईडीए की सोसाइटियाँ

नेटफिश (मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन और चिरस्थायी मत्स्यन के लिए नेटवर्क)

नेटफिश की गतिविधियां

नेटफिश के माध्यम से शिक्षा

मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन और चिरस्थायी मत्स्यन के लिए नेटवर्क (नेटफिश) सोसायटी का 2006 में मरीन प्रोडक्ट एक्सपोर्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी (एमपीईडीए), कोच्चि के तत्वावधान में गठन किया गया है । देश से निर्यातित मत्स्य उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाने और साथ ही चिरस्थायी मत्स्य संसाधनों के लिए भी नेटफिश, एमपीईडीए की विस्तार शाखा, कार्यरत है। नेटफिश का प्रमुख उद्देश्य मछुआरों, महिला मछुआरों, प्रसंस्करण कर्मचारियों, तकनीशियनों, अन्य मत्स्यन हितधारकों आदि को मत्स्य पर ज्ञान प्रदान करके मत्स्यन क्षेत्र को सशक्त बनाना है।

2007 से, नेटफिश भारत के सभी तटीय राज्यों में प्रभावी विस्तार कार्यों का आयोजन कर रहा है। इन राज्यों में चुनिंदा बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों में और आसपास के क्षेत्रों में बार-बार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। अब तक, नेट फिश ने देश भर में लगभग 20000 विस्तारण कार्यक्रम आयोजित किए हैं। नेटफिश कार्यक्रमों में लैंडिंग साइट, मत्स्यन जहाज मछुआरों के गांव, पूर्व प्रसंस्करण केंद्र, प्रसंस्करण कारखाने और सूखे मत्स्य क्षेत्र प्रसंस्करण में आयोजित मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अलावा, मत्स्यन यान, मत्स्यन बंदरगाहों और आसपास के स्थानों में समुद्री प्रसंस्करणों और मत्स्यन के प्राकृतिक संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। लाभार्थियों के बीच इस संदेश को प्रभावी ढंग से प्रचारित करने के लिए, नेटफ़िश द्वारा गली नाटक, स्वच्छता कार्यक्रम, जन संचार कार्यक्रम, स्कूल के बच्चों के कार्यक्रम, चिकित्सा शिविर, रैली आदि विभिन्न विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इन कार्यक्रमों के अलावा, नेटफिश छोटी परियोजनाएं स्वतंत्र रूप से या अन्य संगठनों के साथ मिलकर चलाता है। गुजरात में सीआईएफटी के सहयोग से सूखी मछली के डेमो इकाइयों की स्थापना की गई थी और सूखे मत्स्य उत्पादन में शामिल स्व-सहायता समूहों को सूखे मत्स्य के स्वच्छ उत्पादन के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। महाराष्ट्र में, एमपीईडीए और आरजीसीए के साथ नेटफिश मेंग्रोव केकड़े पर एक परियोजना चला रहा है, जिसे यूएनडीपी द्वारा वित्त पोषित किया गया है। नेटफिश द्वारा पश्चिम बंगाल में "कीचड केकडा खेती के माध्यम से सुंदरबन में अनुसूचित जाति / जनजाति की महिला मछुआरों के लिए एसएचजी की सामाजिक-आर्थिक उन्नयन पर " अन्य एक योजना शुरू की गयी है। साथ ही, आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में एक मॉडल सूखे मत्स्य यूनिट की स्थापना जल्द ही नेटफिश द्वारा की जाएगी। नेट फिश द्वारा समर्थित तीन समुद्री क्लब, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के समुद्री और तटीय अध्ययन विभाग में, सेंट अल्बर्ट्स कॉलेज एर्नाकुलम में मत्स्य पालन और जलकृषि विभाग में और तमिलनाडु फिशरीज विश्वविद्यालय नागापट्टिनम के तहत मत्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान में छात्र स्वयंसेवकों के माध्यम

से तटीय क्षेत्रों में विस्तार गतिविधियों का आयोजन करने के लिए बने हैं ।

दैनिक हार्बर डेटा का एकत्रीकरण

नेटफिश को दैनिक आधार पर, प्रमुख बंदरगाहों में पहुंचने वाली मत्स्यन नौकाओं के विवरण और मत्स्य के प्रकार और मात्रा के आधार पर एक वेब पोर्टल को बनाए रखता है। बंदरगाहों में नियुक्त हार्बर डाटा कलेक्टर / डाटा एंट्री ऑपरेटर बंदरगाह से डाटा विवरण शामिल करके इसे नेटफ़िश मुख्यालय भेजें जहां से यह वेब पोर्टल पर अपलोड किया जाता है। वर्तमान में, भारत के तटीय राज्यों के साथ 25 बंदरगाहों से डेटा एकत्र किया जाता है।

विस्तारण उपकरण

नेटफिश ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपयोग करने के लिए विभिन्न भाषाओं के विभिन्न विषयों पर वृत्तचित्र, एनीमेशन फिल्म, पोस्टर और पत्रक जैसे विभिन्न विस्तारण उपकरण विकसित किए हैं ।

वृत्तचित्र

पोस्टर

2008-09 के दौरान नेटफिश ने मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन, चिरस्थायी मत्स्यन और मत्स्य संसाधनों के संरक्षण पर दस भाषाओं में विभिन्न पहलुओं पर दस पोस्टर बनाए ।

पुस्तिकाएं

नेटफिश ने मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन, चिरस्थायी मत्स्यन और मत्स्य संसाधनों के संरक्षण पर भारत की दस भाषाओं में विभिन्न पहलुओं पर 17 पुस्तिकाएं बनायी । इन पुस्तिकाओं के शीर्षक नीचे दिए गए हैः

चार्ट

- ऑनबोर्ड मत्स्यन जहाज पर अच्छी कार्यप्रणाली
- पूर्व प्रसंस्करण केंन्द्र में अच्छी कार्यप्रणाली
- मत्स्य लैंडिंग केंद्रों में अच्छी कार्यप्रणाली

प्रशिक्षण मैनुअल

मत्स्य गुणवत्ता प्रबंधन और समुद्री मत्स्य संसाधनों का संरक्षण, प्रशिक्षण मैनुअल नेटफिश-एमपीईडीए, कोचीन, पीपी -40 द्वारा प्रकाशित किया गया ।

प्रमुख उपलब्धियॉं

- मत्स्ययन बंदरगाहों में बंदरगाह प्रबंधन सोसायटी का विकास

- विभिन्न बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों पर प्रस्तावित नियमित सफाई कार्यक्रम
- मत्स्य हैंडलिंग के लिए बांस की टोकरियों के बदले प्लास्टिक की टोकरियों का इस्तेमाल करना
- बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों में बुनियादी सुविधाओं के विकास में शामिल होना

- जहाज पर और बंदरगाहों और लैंडिंग केंद्रों पर स्वच्छता हैंडलिंग कार्य प्रणाली में सुधार

श्रिम्प संवर्धन-वर्तमान मुद्दों, प्रथाओं और नवाचारों पर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भारत में जलकृषि (एक्वा) किसानों / लाभार्थियों के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकीय उन्नयन, वर्तमान मुद्दों और श्रिम्प जलकृषि क्षेत्र की चुनौतियों पर चर्चा करना था और इसलिए एमपीईडीए ने इन्फोफ़िश, एनएसीए और एनबीबीएफजीआर के सहयोग से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया, जो संबंधित क्षेत्र में व्यापक विशेषज्ञता और जानकारी रखते हैं। इस कार्यक्रम में हितधारकों, किसानों, सरकारी अधिकारियों, शोधकर्ताओं, छात्रों और अन्य लाभार्थियों द्वारा प्रतिनिधित्व करनेवाले देश भर के प्रतिभागियों ने भाग लिया था । इन्फोफ़िश, एनएसीए और एनबीबीएफजीआर और एमपीईडीए के विषय विशेषज्ञों को संबंधित क्षेत्रों पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। उनकी प्रस्तुति और चर्चा का निष्कर्ष नीचे दिया गया है:

श्री . पी . अनिलकुमार, संयुक्त निदेशक,एमपीईडीए, कोच्ची ने प्रारंभिक भाषण दिया और अपनी प्रस्तुति में उन्होंने भारत में श्रिम्प जलकृषि के सामान्य अवलोकन का उल्लेख किया। उन्होंने विभिन्न हितधारकों के बीच के संबंधों को भी समझाया जो भारत से समुद्री उत्पादों के उत्पादन और निर्यात को नियंत्रित कर रहे हैं। इसी प्रकार उन्होंने पिछले साल के निष्पादन के साथ मौजूदा समुद्री उत्पादों के निर्यात प्रवृत्तियों की तुलना में मदवार, मात्रावार, मूल्यवार और पत्तनवार भी निर्यात आंकड़ों का विश्लेषण किया। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने निर्यात के लिए प्रतिजैविकी मुक्त श्रिम्प बनाने के महत्व और पहले से प्राप्त हुए अस्वीकृति के संकेत और यूरोपीय संघ के देशों से संभाव्य प्रतिबंध पर चेतावनी का भी जिक्र किया । उन्होंने जलकृषि क्षेत्र, विशेष रूप से भारत से झींगा

निर्यात को, जिसका भारतीय अर्थव्यवस्था का समर्थन करने में अत्यधिक महत्व है, को सुरक्षित रखने के लिए इस तरह की अस्वीकृति से निपटने के लिए तत्काल उपायों को अपनाने का सुझाव देते हुए अपना भाषण समाप्त किया ।

श्री.पी.अनिल कुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए.

दूसरा प्रस्तुतीकरण इन्फोफिश की सुश्री शर्लिन मारिया एंथनीसामी ने किया था और उन्होंने मौसम और कीमत के संदर्भ में वैश्विक श्रिम्प बाजार की प्रवृत्तियों का उल्लेख किया। अपनी प्रस्तुति के दौरान उन्होंने निम्नलिखित मुद्दों पर जोर दिया जिसने दुनिया भर में श्रिम्प जलकृषि को बढ़ाने के लिए बहुत योगदान दिया,

- जलकृषि क्षेत्र में चिरस्थायी विकास और बढ़ती मांग से पिछले दशक के दौरान दुनिया भर में श्रिम्प उत्पादन और व्यापार में काफी वृद्धि हुई
- जलकृषि के माध्यम से श्रिम्प और झींगे की अधिक उपलब्धता और सस्ती कीमतों के कारण पारंपरिक अमेरिका और यूरोपीय संघ के बाजारों में बढ़ोतरी हुई है।
- जापान में कच्चे श्रिम्प का समग्र आयात गिरने लगा है लेकिन बाजार में श्रिम्प उत्पादक देशों में प्रसंस्कृत किए गए मूल्य वर्धित श्रिम्प का आयात अधिक किया जाता है।
- नए बाजारों का उभार इस व्यवसाय के लिए एक और पूरक घटक भी है।

उन्होंने जोर दिया कि 2016 में, जापान, अमरीका और यूरोपीय संघ के तीन प्रमुख बाजारों में श्रिम्प के संयुक्त आयात में 2011 की तुलना में 7.6% गिरावट दर्ज की गयी। तुलनात्मक रूप से, पूर्वी एशिया के उभरते बाजारों में आयात स्थिर था। फरवरी-मार्च में चीनी नववर्ष के त्योहार के दौरान, पूर्वी एशियाई बाजारों में जीवित और ताजा श्रिम्प की मांग अच्छी कीमतों पर दृढ थी, जबकि पारंपरिक बाजारों के लिए नियत शीतित श्रिम्प की तुलना में अच्छी कीमतें थीं। तथापि जापानी बाज़ार, येन के निरंतर अवमूल्यन से प्रभावित हुआ - जो वसंत त्यौहार के दौरान बिक्री के अवसरों को प्रतिबंधित करने वाला एक कारण बना ।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, अपेक्षा से कम ठोस सौदा मार्च में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बोस्टन सी फुड शो पर संपन्न हुआ - जो एक रूढ़िवादी बाजार की प्रवृत्ति का संकेत है । यूएस-डीओसी द्वारा सात देशों पर काउंटरवैलिंग ड्यूटी (सीवीडी) लागू करने का घटक भी अमरीका में वर्तमान आयात को प्रभावित करने वाला एक कारण है। 2016 में, युरोपीय बाजार ने देखा कि कुल श्रिम्प आयात की मात्रा 9% और मूल्य में 11% कम है और इस वर्ष की शुरुआत के दौरान बाजार धीमा रहा है।

दिसंबर के बाद से अंतरराष्ट्रीय बाजार में श्रिम्प की कीमतें बढ़ गई, यद्यपि पारंपरिक बाजारों में मांग में कोई वास्तविक वृद्धि नहीं हुई । नवंबर 2012 के बाद से आपूर्ति की कमी और 2013 के लिए कम उत्पादन पूर्वानुमान इस स्थिरता के मुख्य कारण हैं। एशिया में शीघ्र मृत्यु दर सिंड्रोम (ईएमएस) की बीमारी के फैलाव के कारण वन्नमई की आपूर्ति सीमित है । वन्नमई की दुनिया भर में कमी को देखते हुए, दिसंबर 2012 के बाद से कीमतें काफी बढ़ गईं ।

उन्होंने यह भी बताया कि भारत से, मूल्यवर्धित

श्रिम्प का निर्यात 2015 में 10, 100 टन से बढ़कर 2016 में 23, 400 टन (+ 130%) हो गया, जो ज्यादातर अमेरिकी बाजार को किया गया है । उन्होंने मौसमी उत्पादन स्तर और प्रमुख श्रिम्प उत्पादन और उपभोक्ता देशों में घरेलू बाजारों के विकास का भी उल्लेख किया।

उन्होंने बताया कि एशिया और लैटिन अमेरिका के अधिकांश उत्पादक देशों में श्रिम्प की खपत में वृद्धि हुई है जिससे घरेलू और क्षेत्रीय बाजारों में बेहतर अवसर और प्रतिरोध पैदा हो रहे हैं।

इसी तरह खेती की गई श्रिम्प ने उच्च मूल्य वाले उत्पादों को निर्यात करने में भी मार्ग प्रशस्त किए । श्रिम्प उत्पादक देशों के प्रसंस्करण उद्योगों में चिरस्थायी आपूर्ति और विकास ने मूल्य-वर्धित और सुविधाजनक उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला के प्रसंस्करण के अवसर उपलब्ध कराए जो विकसित और विकासशील बाजारों में सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

उनकी दूसरी प्रस्तुति 'खेती की गयी श्रिम्प के निर्यात के लिए अंतर्राष्ट्रीय विनियामक आवश्यकताएं' पर थी । अपनी प्रस्तुति में उन्होंने अंतरराष्ट्रीय विनियमन, अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर खाद्य सुरक्षा अवधारणाओं, आयातकों के परिप्रेक्ष्य, विभिन्न देशों में आयात विनियमन आदि लक्ष्य बताया। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस तरह के अंतररष्ट्रीय नियम,

- उपभोक्ताओं के लिए उच्च स्तर की स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करेंगे
- सुनिश्ति करें कि केवल सुरक्षित भोजन और चारा बाजार में दिया गया है; और विशेष रूप से खाद्य पदार्थों के व्यापार के संबंध में दोनों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दायित्व हैं।
- सुरक्षित भोजन और चारा में स्थानीय और आंतरिक बाजार दोनों के लिए प्रभावी कार्य का आश्वासन दिया जाना चाहिए
- जहां उपयुक्त हो, पर्यावरण की सुरक्षा, जीव की स्वास्थ्य सुरक्षा, जीवन एवं कल्याण और पौधे के स्वास्थ्य और जीवन की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए।

एमपीईडीए / इन्फोफिश / एनबीएफजीआर/ एनएसीए प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान दर्शक गण

सुथेप पुटीप्पायवोंग्सा

सुथेप पुटीप्पायवोंग्सा ने अपनी प्रस्तुति में आरएएस प्रणाली के घटकों को विशेष रूप से श्रिम्प जलकृषि के संदर्भ में बताया, जिसमें हैचरी और खेत दोनों शामिल हैं। उन्होंने बंद जलकृषि उत्पादन प्रणाली या जैव सुरक्षा के अनुसार शून्य जल विनिमय प्रणाली का महत्व भी बताया। उन्होंने जोर देकर कहा कि श्रिम्प जलकृषि में प्रचलित घातक बीमारियों को रोकने के लिए, एक पेशेवर के तौर पर उच्च जैव सुरक्षा संरक्षित हैचरी या खेत के निर्माण को बहुत समर्थन देगा । उन्होंने पुनरुपयोगी जलकृषि प्रणाली के बुनियादी सिद्धांत के साथ ऐसी जैव सुरक्षा उत्पादन प्रणाली को संचालित करने के लिए एक संकेतक अर्थशास्त्र भी समझाया।

उनका दूसरा प्रस्तुतीकरण श्रिम्प खेत प्रबंधन पर था और उन्होंने तालाब तैयारी, ब्लूम डेवलपमेंट, प्रोबायोटिक्स का इस्तेमाल और श्रिप खेत ऑपरेशन

के लिए अन्य इनपुट्स के प्रबंधन के लिए भी विभिन्न उपायों का पालन किए जाने पर जोर दिया ।

उन्होंने पीएल चयन और संग्रहण के लिए सर्वेच्च प्राथमिकता के साथ विचार करने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं का प्रस्ताव भी दिया।

1. उच्च जैव सुरक्षात्मक आपरेशन के साथ कुछ प्रतिष्ठित हैचरी से श्रिम्प पोना चुने।
2. हैचरी और संवर्धन तालाब में पानी की गुणवत्ता कम या अधिक समान होनी चाहिए।
3. बेहतर अनुकूलन के लिए संवर्धन तालाब और हैचरी में पानी की गुणवत्ता का समन्वय।
4. न्यूनतम समय में गंतव्य तक पहुंचने के लिए सुविधाजनक परिवहन
5. श्रिम्प पोने का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया जाना चाहिए और बैग में ही बिना किसी अपारदर्शी पेशी का सक्रिय लार्वा सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
6. हैचरी में ही बीज की संख्या की गणना करें
7. बैग में बीज मृत्यु दर की संख्या 20% से कम होनी चाहिए।
8. स्ट्रेस्स परीक्षण (% एसआर) 30 मिनट के लिए मीठे पानी के साथ परीक्षण करके वापस पालन जल में एक बार और 30 मिनट तक परीक्षण करें (उत्तरजीविता दर आम तौर पर 95% से अधिक होनी चाहिए)।
9. तापमान के स्टॉक से बचने के लिए सुबह या दोपहर में श्रिम्प का भंडारण करें ।
10. 30-60 मिनट के लिए तालाबों में श्रिम्प पोना बैग को जलवायु के अनुकूल बनाएं।
11. संग्रहण से पहले, पैडलव्हील एरेटर 8-12 घंटे से चलाया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि तालाब में विघटित ऑक्सीजन 4 मिलीग्राम / लि. से अधिक हो ।

अनिल घाणेकर

श्री.अनिल घाणेकर ने 'बायोफ्लॉक प्रणाली के प्रयोग और भारत में आरएएस आधारित जलकृषि पर केस अध्ययन' विषय पर प्रस्तुतीकरण किया । अपनी प्रस्तुति के पहले भाग में, उन्होंने पारंपरिक जलकृषि कार्यप्रणाली की तुलना में शून्य जल विनिमय प्रणाली संकल्पना और विशेष रूप से जैव सुरक्षा पहलुओं पर इसके फायदे बताए। उसी प्रकार बायोफ्लॉक धारणा और इसके मूलभूत सिद्धांतों को उनके द्वारा समझाया गया । उन्होंने यह भी बताया कि प्रत्येक प्रणाली के लिए जीव की क्षमता को भी समझना चाहिए क्योंकि आर.ए.एस. में मोनोईन और बायोफ़्लॉक की तुलना में बेहतर एफ.सी.आर. संकेत दिखता है। परंतु बायोफ्लॉक नर्सरी प्रणाली में मोनोडोन की उत्तरजीविता दर बेहतर है। उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि शून्य जल विनिमय संकल्पना दुनिया में नवीनतम है और यह निम्नलिखित को सुनिश्चित करता है,

- जैव सुरक्षा
- आपरेशन में किफायत
- अनुमानित उत्पादन
- प्रतिजैविक /रासायन मुक्त उत्पादन
- (पर्यावरण-अनुकूल) और चिरस्थायी दृष्टिकोण

डॉ.मनोज एम.शर्मा

डॉ.मनोज एम.शर्मा, मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक ने अपनी प्रस्तुतीकरण के दौरान जोर देकर कहा कि वर्तमान में भारत खारे पानी के तालाबों से 480, 000 टन संवर्धित श्रिम्प से औसतन 35 ब्लैक टाइगर श्रिम्प, पी.मोनोडोन और 40-60 व्हाइट लेग श्रिम्प, एल वन्नमई का उत्पादन कर रहा है।

उन्होंने एक मॉडल के रूप में गुजरात (भारत) से अपने अनुभव के बारे में भी बताया और यह

राज्य देश के उत्पादन का केवल 10% योगदान दे रहा है लेकिन सभी खाद्य सुरक्षा प्राटोकॉल के साथ औसतन ग्रेड संख्या 20/30 की व्हाइट लेग श्रिम्प अधिक मानक और जैव सुरक्षा संवर्धन अभ्यास के साथ बीएमपी का पालन कर रहा है। मेसर्स मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड, गुजरात (भारत) में अग्रणी निजी जलकृषि कंपनियों में से एक है, जो कि इष्टतम स्टॉकिंग घनत्व और 6.5 टन / हेक्टेयर / फसल औसतन ग्रेड संख्या 20/30 के साथ ब्लैक टाइगर श्रिम्प के साथ-साथ व्हाइट लेग श्रिम्प दोनों का उत्पादन ले रहा है । व्हाइट लेग श्रिम्प के अपने गुण-दोष हैं, इस तथ्य के बावजूद श्रिम्प किसान पी मोनोडोन से एल वन्नमई के प्रमुख परिवर्तन की ओर गए । मे.मयंक एक्वाकल्चर प्राइवेट लिमिटेड ने ब्लैक टाइगर श्रिम्प परिवर्तन के समान पैमाने पर भविष्य में व्हाइट लेग श्रिम्प के उच्च स्टॉक घनत्व का पूर्वानुमान किया है और वर्ष 2009 में विभिन्न श्रेणी की स्वीकृति योग्य संग्रहण घनत्व के साथ कुछ प्रयोगात्मक स्थापना शुरू की।

उन्होंने यह भी बताया कि संग्रहण घनत्व प्रयोगों का परिणाम बहुत प्रोत्साहक था, 15-20 पीसीएस/ एमटी2 और एबीडब्ल्यू 40-50 ग्राम (20-30 संख्या/ किग्रा) का आकार सबसे लाभदायक और साथ ही श्रिम्प खेती के लिए चिरस्थायी तरीका भी है। उन्होंने प्रशिक्षण के प्रतिभागियों के लिए तालाब के उन्मूलन, प्रीपरेशन, लाइमिंग, ब्लूम डेवलपमेंट, पीएल चयन, परिवहन, अनुकूलन, खाद्य और चारा प्रबंधन, निगरानी, लाभदायक उत्पादन आदि के लिए विपणन कार्यनीति के साथ वैज्ञानिक खेत ऑपरेशन के सभी घटकों को भी बताया ।

डॉ कुलदीप कुमार लाल

डॉ कुलदीप कुमार लाल ने " जलजीव रोगों के लिए राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम" इस विषय पर प्रस्तुतीकरण किया। अपनी प्रस्तुति के दौरान उन्होंने बताया कि प्रभावी स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संबंधित रोगों की निगरानी प्राथमिक आवश्यकता है और यह निम्न का समर्थन करेंगे

- रोगों की प्रारंभिक चेतावनी
- रोग नियंत्रण कार्यक्रमों की योजना और निगरानी
- किसानों को स्वस्थ जलजीव स्वास्थ्य सलाह के प्रावधान
- निर्यात/आयात के प्रमाणीकरण अंतरराष्ट्रीय रोग रिपोर्टिंग कार्य (डब्ल्यूटीओ/ओआईई)
- उन्होंने यह भी बताया कि विश्वसनीय रिपोर्टिंग प्रणाली की आवश्यकता रोगों की रिपोर्ट करने के लिए आवश्यक है, जैसा कि ,
- जल जीवों की रोग के प्रकोपों के अधिकांश मामलों की रिपोर्ट नहीं हुई; और रोगों का निदान नहीं हुआ ;
- असामान्य रोग घटनाओं के प्रकोप की जांच के लिए सीमित विशेषज्ञता
- स्तर I में निदान - विश्व स्वास्थ्य संगठन (ओआईई)। एशिया-प्रशांत के एक्वाकल्चर केंद्रों के नेटवर्क की त्रैमासिक एक्वाटिक एनिमल डिजीज रिपोर्ट में अधिकांश बीमारियों की रिपोर्ट
- गलत रिपोर्टिंग के कई मामले, उदा. संक्रामक पैनक्रिएटीक नेक्रोसिस, बाकुलोवायरल मिडगुट ग्लैंड नेक्रोसिस और एपीजूटिक हैमेटोपोएटिक नेक्रोसिस; भारत से सूचना मिली लेकिन मौजूद नहीं है।
- नई बीमारियों को प्रकाशित किया गया, लेकिन क्यूएएडी रिपोर्ट में ।
- मिसरिपोर्टिंग रोगजनकों की उपस्थिति और अनुपस्थिति दोनों सीधे निर्यात को प्रभावित करते हैं - आयातकों को विश्वास की आवश्यकता होती है। (विश्व व्यापार संगठन के तहत एसपीएस प्रोटोकॉल)

- साथ ही रोग हादसों और फैलाव पर जानकारी इकठ्ठा करने और नए और विदेशी संक्रामक रोगों का पता लगाने के लिए एक उचित निगरानी कार्यक्रम की आवश्यकता है। इसी तरह, जल जीवों के रोगों पर राष्ट्रीय सूचना प्रबंधन प्रणाली स्थापित करने और ओआईई और एनएसीए को देश की रिपोर्टिंग कार्यों में सुधार करने के लिए एक ऐसी व्यवस्था आवश्यक है ।

डॉ युआन डेरुन

डॉ.युआन डेरुन ने "मौजूदा प्रचलित लाभ की श्रिम्प संवर्धन प्रणालियां" - पर प्रस्तुतीकरण किया जिसमें उन्होंने विभिन्न प्रकार की खेती प्रणाली सहित, मोनोकल्चर, पॉली कल्चर, विस्तारित कृषि प्रणाली, अर्द्ध गहन, गहन, सुपर गहन, हरे जल पर आधारित, बायोफ्लॉक आधारित और आईएमटीए एवं व्यावसायिक महत्व की विभिन्न प्रजातियों में उनका इस्तेमाल भी समझाया ।

उनके प्रस्तुतीकरण में बायोफ़्लॉक टेक्नोलॉजी, बायोमीमिक्री और एक वाणिज्यिक ऑपरेशन के लिए ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित करने के लिए शामिल विभिन्न घटक / प्रक्रिया के विवरण भी दिए। उन्होंने संवर्धन के बायोफ्लोक पद्धति के फायदे के रूप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं को भी बताया,

- जोखिमी और चयापचयों को सुरक्षित स्तर पर रखें
- बायो फ्लॉक्स को श्रिम्प फ़ीड के रूप में विकसित करें
- बायो समुच्चय में प्रोटीन का उच्च मूल्य (60% ऊपर)
- श्रिम्प पेलेट्स में संभवतः प्रोटीन स्तर को कम करना
- समग्र एवं प्रयोग कार्यक्षमता स्तर में वृद्धि
- प्रवाह निर्वहन कम करना
- सशक्त रुप से श्रिम्प को स्वास्थ्य लाभ उत्पन्न करना

उन्होंने प्रारंभिक नर्सरी पालन के साथ संवर्धन चरणबद्धता के साथ किए जाने का और फिर संवर्धन विकसित करने का सुझाव दिया, जो निश्चित रूप से सामान्य स्टॉकिंग और विकसित करने की तुलना में अधिक लाभप्रद होगा ।

डॉ.गौरव राठोर

डॉ.गौरव राठोर ने 'एशियाई जलकृषि के सुसंगत श्रिम्प रोगों के लिए जैव सुरक्षा' विषय पर प्रस्तुतीकरण किया जिसमें भारत में जलकृषि से संबंधित सभी मुद्दों को विशेष रूप से रोगों का भाग समाविष्ट किया गया है। उन्होंने संगरोध, जैवसुरक्षा, खेती के लिए लार्वा का स्त्रोत, सामग्री का कीटाणुशोधन आदि के महत्व को समझाया। इसके अलावा उत्पादन स्तर, जोखिम घटक, राष्ट्रीय स्तर की कार्यनीति आदि जैसे जैव सुरक्षा उपाय के सभी पहलुओं को उनकी प्रस्तुतीकरण में समझाया । उन्होंने भी निम्नलिखित उत्पादन स्तर जैव सुरक्षा उपाय सुझाए,

- ब्रूडस्टॉक के लिए फीड्स के रूप में कभी भी प्रकृतिकृत , कैप्चर्ड, जीवित जीवों जैसे, लाइव पोलीचीट्स, क्लैम्स और ऑयस्टर का उपयोग न करें।
- यदि उपयोग किया जाता है, तो उपयोग करने से पहले प्रशीतित होना चाहिए क्योंकि इससे ज्यादातर ईएचपी और एएचपीएनडी को खत्म सकते हैं।
- बेहतर है पाश्चराइजेशन (70 डिग्री सेल्सियस पर 10 मिनट के लिए गर्म करें क्योंकि यह प्रमुख श्रिम्प वायरस को भी मार देगा।
- किसान सामान्य पालन तलाबों से सबसे बडे श्रिम्प का चयन करें और उन्हें ब्रुडस्टॉक के आकार तक बढने के लिए नए तालाबों में बदली करें ।
- यह श्रिम्प बाहरी तालाबों में पालन करने के दौरान एसपीएफ़ की स्थिति को खो देते हैं, और इस तरह के ब्रूडस्टॉक की जांच से पता चलता है कि उनमें ईएचपी के लिए बहुत अधिक प्रबलता है।
- पीएल उत्पादन की लागत को कम करने के

लिए हैचरीज़ इन स्थानीय रूप से निर्मित, सस्ती ब्रुडस्ट को अधिक महंगे, एसपीएफ़ स्टॉक के साथ मिलाते हैं।

- ब्रूडस्टॉक परिपक्वता की सुविधाएं और हैचरी सुविधाएं साफ हों!
- इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए, सभी श्रिम्प को हैचरी से निकाला जाए और इसे 2.5% सोडियम हाइड्रॉक्साइड घोल (25 ग्राम एनएओएच/लि.ताजे पानी) के साथ साफ किया जाए। इसके बाद 3 घंटे संपर्क समय के बाद बचा हुआ घोल धोया जाए ।
- इस प्रक्रिया में सभी उपकरण, फिल्टर, जलाशय और पाइप समाविष्ट होने चाहिए।
- एन ए ओ एच ($NaOH$)को निकालने के लिए, धोने के बाद हैचरी को 7 दिनों तक सुखाना चाहिए।
- फिर इसे अम्लीकृत क्लोरीन (200 पीपीएम क्लोरीन घोल के साथ धोया जाना चाहिए।)
- ईएचपी बीजाणुओं के मिट्टी के तालाबों को कीटाणुरहित करने के लिए, 6 टन/हेक्टर में कैल्शियम ऑक्साइड त्वरित चूना, जला हुआ चूना, अनबुझा चूना या गर्म चूना का इस्तेमाल करें।
- कैल्शियम ऑक्साइड को शुष्क तालाब के तलछट (10-12 सेमी) में मिला और फिर चूने को क्रियाशील करने के लिए तलछट को गीला करें।
- फिर सुखाने या भरने से पहले 1 सप्ताह के लिए छोड़ दें।
- कैल्शियम ऑक्साइड के इस्तेमाल के बाद, मिट्टी की पीएच वृद्धि कुछ दिनों तक 12 या अधिक होनी चाहिए और फिर सामान्य स्तर में वापस आ जाएगी क्योंकि यह कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है और कैल्शियम कार्बोनेट ($Caco_3$) बन जाता है।

30 सितंबर को प्रशिक्षण कार्यक्रम संवादात्मक सत्र के साथ समाप्त हुआ, जहां प्रशिक्षण के प्रतिभागी ने विषय विशेषज्ञों के साथ एक सक्रिय चर्चा की और श्रिम्प जलकृषि और नवीनतम प्रौद्योगिकीय उन्नति के विभिन्न पहलुओं पर उनकी शंकाओं का समाधान किया । देश के दूसरे भागों में ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन के लिए आगे की योजना बनाने के लिए एक विशेष मूल्यांकन फार्म का उपयोग करके विषय सामग्री और दो दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान का मूल्यांकन किया गया ।

श्री.पी.अनिलकुमार, संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए,श्री.एस सुरेश रेड़्डी, एमपीईडीए प्राधिकरण सदस्य और अन्य गणमान्य व्यक्ति

श्री.अनिलकुमार पी.,संयुक्त निदेशक, एमपीईडीए ने समापन भाषण के दौरान, एक बार फिर से प्रतिभागियों को चेतावनी दी कि अब आयात करने वाले देशों के मानकों / आवश्यकताओं को बनाए रखने के लिए ट्रेसीबिलिटी को सख्ती से लागू किया जा रहा है और सभी हितधारकों / प्रसंस्करण कर्ताओं और जलकृषि किसानों को भारत से सबसे अच्छे गुणवत्तावाले श्रिम्प का उत्पादन और आपूर्ति के लिए मिलकर काम करना चाहिए ताकि भारतीय उत्पादों को दुनिया भर में बेहतर बाजार स्वीकार्यता और बेहतर मूल्य मिलेगा। किसी भी प्रकार की अस्वीकृति प्रतिजैविक / कीटनाशक या किसी अन्य कारण हो सकती है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था में गंभीर रूप से हानि कर सकती है और निश्चित रूप से यह लाखों लोगों को प्रभावित करेगी, जो कि जलकृषि क्षेत्र पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर हैं।

नन्ही कलियाँ, खिलने दो !!!

मैं बहुत उदास महसूस कर रही थी, इसलिए मैंने अपनी मनोदशा को बदलने केलिए कुछ समय बाहर बिताने के बारे में सोचा । जैसे ही मैं अपने घर से बाहर निकल रही थी , मैंने अपने पड़ोसी के घर से ज़ोर ज़ोर से आवाज़ सुनी। चूंकि, मेरी पड़ोसी सिमी मेरी बहुत करीबी दोस्त थी , मैं एक पल के लिए भी सोचे बिना घर के भीतर दाखिल हो गयी । मेरी मुख्य चिंता यह थी, कि अगर किसी को कोई चोट लगी है, तो तुरंत मदद करनी होगी। अंदर घुसते ही मैंने सिमी को गुस्से से लाल पीला पाया, और शंकर को सहमा मगर दृढ़ पाया ।

शंकर सिमी का बड़ा बेटा है। मुझे थोड़ा अजीब लगा, उनके व्यक्तिगत जीवन में घुसपैठ करने का मुझे कोई अधिकार नहीं । थोड़ी देर वहाँ ख़ड़े होने के बाद, मैं धीरे से दरवाजे की तरफ बढ़ी।

सिमी ने मुझे देखा और कहा, 'हम इनके लिए क्या क्या नहीं करते , सब बेकार है, नये पढ़ना चाहते है, न ही जीवन में आगे बढना चाहते हैं " उसने शंकर को गुस्से से देखा और कहा ' शर्मा जी के बेटे को देखो उसको गणित में 95% मिले हैं और यह महान सिर्फ 75% से संतुष्ट है'। मुझे शंकर के लिए बुरा लगा। मैंने उसको देखा, लेकिन उसकी आंखे मुझे तीक्ष्णता से जला रही थी। वह मुझसे मदद की उम्मीद में भोली नज़रों से इशारा कर रहा था । मुझे अपने ऊपर लज्जा आई बिना कुछ कहे मैं वहाँ से निकाल पड़ी, पर उस नन्हें मन की पीड़ा मेरे दिलो

दिमाग को झँकझोड़ गयी । मैं शंकर को तब से जानती हूँ जब वह छोटा बच्चा था । मासूम, नटखट, जोशीला, और बहुत ही काबिल बच्चा। पर आज कल वह बहुत चुप- चाप और शांत रहता है। खेलते हुए तो मैंने उसे देखे काफी दिन हो गए।

इसी सोच में चलते -चलते मैं समुद्र के किनारे पहुँची, और लहरों को देख दिल को कुछ सुकून मिला। मैं समुद्र के किनारे चलते हुए सोचने लगी, मनुष्य आखिर किस दौड़ में है, क्या है जो उसे संतुष्ट करेगा। सिमी एक अच्छी माँ है, लेकिन वह भी आज की दौड़ में अपने बेटे को प्रथम स्थान पर चाहती है।

क्यों हम भूल जाते हैं कि जिंदगी लाइफटाइम वैलिडिटी नहीं देती, कब हमारा सफर खतम हो जाये कोई नहीं जानता, फिर भी लगे हुए हैं, इस रेस में। हम में से अधिकांश लोग भूल जाते हैं या इस तथ्य को नकार देते हैं कि जीवन इतना छोटा है कि आप अगले घंटे की गारंटी किसी को नहीं दे सकते। फिर यह प्रतियोगिता, तनाव, क्रोध, तुलना, किस लिए।

हम अपना जीवन तो ऐसे ही गवा बैठे, क्यों इन नन्ही कलियों को रोके। इन्हें उड़ान भरने दो, जिंदगी जी लेने दो, रोको मत पंख पसार उन्मुक्त इस भरे संसार की हर रंगीन और खूबसूरत गलियों में घूमने दो। कुछ शरारतें करने दो, बच्चे हैं तो बचपना रहेगा, मासूमियत रहेगी। अरे हम भी इनकी बिना मिलावट की मुस्कान में खो कर , क्या जाने कुछ पल जिंदगी जी ले, वरना अभी तो बस जिंदगी बिता रहे हैं।

खोल दो बंधनों को, अपनी इच्छा से जिएंगे तो आज़ाद रहेंगे, टोको लेकिन इस तरह कि उनका आत्मविश्वास न टूटे। उन्हें सुधारें, उनका मार्गदर्शन करें, लेकिन उनसे यह कभी ना कहें कि वे लायक नहीं हैं क्योंकि आप जानते हैं कि उनसे ज़्यादा कीमती आपके लिए जिंदगी में कुछ भी नहीं!!!

अंजु
सहायक निदेशक

चुटकुले

“हिन्दी भी सरल नहीं है,आजकल के बच्चों के लिए...
टीचर- रामस्वरूप बीमार हुआ फलस्वररूप मर गया......सब लोग इसका अंग्रेजी में अनुवाद करो. .
पप्पू- मास्टर साहब अगर बीमार रामस्वरूप था तो फलस्वरूप क्यों मरा.???? .
टीचर- मूर्ख इसका मतलब है रामस्वरूप बीमार हुआ परिणामस्वरूप मर गया.
पप्पू - ले अब तीसरा मर गया... ”

“टीचर :- 1869 में क्या हुआ ??.....
सुरेश :- गांधीजी का जन्म ...
टीचर :- बिलकुल सही. बैठो नीचे ..
टीचर :- रमेश तू बोल.. 1872 में क्या हुआ ....
रमेश :- गांधीजी 3 साल के हो गए... मैं भी बैठू क्या... ”

एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर, नेल्लोर

एमपीईडीए का सैटेलाइट सेंटर, नेल्लोर अगस्त 2013 वर्ष में एक कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी (श्री.जी. अलेक्साडंर) के साथ शुरू किया गया था और बाद में एक कनिष्ठ लिपिक (श्री दिलीप कुमार) को फरवरी 2016 में नियुक्त किया गया । अप्रैल 2017 के बाद डॉ.गणेश के, को सहायक निदेशक के रूप में सैटेलाइट सेंटर नेल्लोर में नियुक्त किया गया । सितंबर 2017 में श्री दिलीप कुमार का एमपीईडीए मुख्यालय में तबादला हो गया और उनके स्थान पर श्री मोहन एम एम, तकनीकी सहायक को नियुक्त किया गया । संप्रति कार्यालय में कुल कर्मचारियों की संख्या तीन है, जिसमें एक सहायक निदेशक, एक कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी और एक तकनीकी सहायक हैं ।

नेल्लोर - कुछ तथ्य

नेल्लोर जिला (आधिकारिक तौर पर: श्री पोट्टी श्रीरामुलू (एसपीएसआर नेल्लोर) जिला), तटीय आंध्र क्षेत्र में स्थित आंध्र प्रदेश के 13 जिलों में से एक है और इसे संवर्धित श्रिम्प के उच्च उत्पादन के कारण **'भारत की श्रिम्प की राजधानी'** कहा जाता है।

एसपीएसआर नेल्लोर जिले को आंध्र प्रदेश के मत्स्यन के नक्शे में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। जिला, प्रचुर समुद्री, अंतर्देशीय और लवण जल मत्स्य संसाधनों से संपन्न है। ताजे पानी की नदीजल संसाधन स्वर्णमुखी हैं, जो नायडूपेटा, कोटा और वकाडु मंडल को समाविष्ट करती हैं। पेनना नदी सोनासिला, अनंतसागरम, बुची, कोवुर और इंदुकुरपेड मंडल को समाविष्ट करती हैं । लवणजल नदी के स्रोत में कंडालेरू क्रीक(खाडी) , चिलाकुर, मुथुकुर, वेंकटाचलम और मनुबोलु मंडल समाविष्ट हैं। प्यूडेरु क्रीक(खाडी) में अलूर और विदावलूर मंडल समाविष्ट हैं। चिप्पालेरू क्रीक(खाडी) में बोगोलु और कवाली मंडल समाविष्ट हैं ।

सांख्यिकीय जानकारी (मत्स्यन स्रोत विभाग, नेल्लोर)

1	तटीय रेखा की लंबाई:	169 कि.मी.
2.	तटीय मंडलों की संख्या:	12
3.	तटीय मछुआरों के गांवों / निवासों की संख्या:	118
4.	मछुआरों की जनसंख्या:	1,98,000
5.	सक्रिय मछुआरे:47,792	
6	मत्स्यन पोत (क्राफ्ट) :	7787
क	यंत्रीकृत मत्स्यन पोत(एमएफवी):	21
ख	मोटरीकृत पोत (क्राफ्ट) (एमसी):	3435
ग	देशी पोत (क्राफ्ट) (सीसी):	4331
7.	तट संचार की संख्या (वीएचएफ स्टेशन):	(1) कृष्णपट्टणम पोर्ट
8.	मत्स्य लैंडिंग केंद्रों की संख्या:	118
9.	जलकृषि के तहत अनुमानित क्षेत्र:	11,305 हेक्टर। (एपीएसएसी)
10.	जलकृषि संभावित क्षेत्र:	9,508 हेक्टर। (एपीएसएसी)
11.	मीठा पानी जल कृषकों की कुल संख्या:	2531
12.	लवणजल जलकृषकों की कुल संख्या:	3525

	जल कृषकों की कुल संख्या (11 अ 12):	6056
13.	विभागीय टैंकों की संख्या:	41 9 (49,268.86 हेक्टर)
14.	अन्य सिंचाई टैंक:	1337 (62,100 हेक्टर)
15.	जलाशयों की संख्या:	07 (72,427 हेक्टर)
16.	मछुआरे सहकारी समितियों की कुल संख्या (एफसीएस):	246
17.	मत्स्य बीज फार्मों की संख्या:	सरकारी - 03, निजी - 4
18.	श्रिम्प हैचेरीज़ (निजी) की संख्या सीएए द्वारा पंजीकृत:	66
19.	अंतर्देशीय श्रिम्प हैचरीज, भारत सरकार द्वारा पंजीकृत:	9
20.	बर्फ संयंत्रों की संख्या:	24 (क्षमता 854 टन / दिन)
21.	श्रिम्प प्रसंस्करण संयंत्रों की संख्या:	11 (क्षमता 505 टन / दिन)
22.	शीत भंडारण की संख्या:	11 (क्षमता 7715 टन / दिन)
23.	फीड संयंत्रों की संख्या मुख्य	06 (क्षमता 706 टन / दिन)

एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर, नेल्लोर द्वारा हैचरी वित्तीय सहायता के लिए अनुदान

एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर, नेल्लोर द्वारा आरंभ से एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा के निरंतर मार्गदर्शन के साथ नेल्लोर क्षेत्र में हैचरियों को निम्न इमदाद (सब्सिडी) सहायता प्रदान की गई।

हैचरी इमदाद (सब्सिडी): 24 हैचरी / रु.1,38,00,000.00

हैचरी में ईटीएस के लिए इमदाद (सब्सिडी): 21 हैचरी / रु.31,40,070.00

हैचरी में पीसीआर के लिए इमदाद (सब्सिडी): 19 हैचरी / रु.94,95,000.00

हैचरियों को प्रदान की गई कुल वित्तीय सहायता: 2.64 करोड़

नेल्लोर से सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले श्रिम्प उत्पादन में एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर की भूमिका

चूंकि एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर को 2013 में स्थापित किया गया, यह इस क्षेत्र में जलकृषि (एक्वा) किसानों के लिए तकनीकी सहायता, हैचरी ऑपरेटरों को वित्तीय सहायता निरंतर प्रदान कर रहा है। इसके अलावा एंटीबायोटिक दवाओं के दुरुपयोग पर जागरूकता के लिए ग्राम स्तर पर आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन और चिरस्थायी जलकृषि आपरेशन के लिए जलकृषि में विविधीकरण के महत्व पर कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है।

यद्यपि नेल्लोर आंध्र प्रदेश से जलकृषि उत्पादन में चौथे स्थान पर है, तथापी एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा के निरंतर मार्गदर्शन के तहत सैटेलाइट सेंटर के सतत प्रयासों के कारण यह आंध्र प्रदेश से सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले श्रिम्प का उत्पादन करता है, यहां के किसान जलकृषि संबंधी निविष्टियां (इन्पुट) आदि के उपयोग पर अधिक जागृत हैं । एमपीईडीए सैटेलाइट सेंटर नेल्लोर की सभी संवंर्धनात्मक गतिविधियां एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा को सौंपी गई हैं और एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा और टीम के काम के कारण इस क्षेत्र से बेहतरीन गुणवत्ता वाले श्रिम्प उत्पादन में सकारात्मक परिणाम मिले हैं।

नेल्लोर क्षेत्र की प्रमुख गतिविधियों का आलेखात्मक निरूपण, वर्ष 2013-14 से 2016-17 तक नीचे दिया गया है:

क. सामान्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

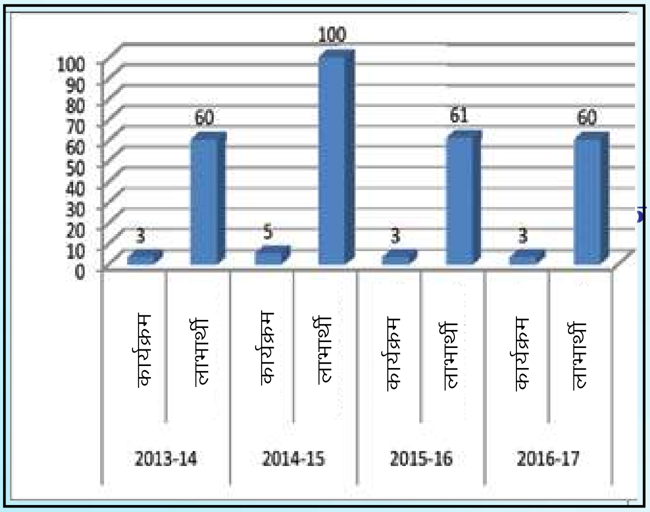

ख. अनुसूचित जाति / जनजाति प्रशिक्षण कार्यक्रम

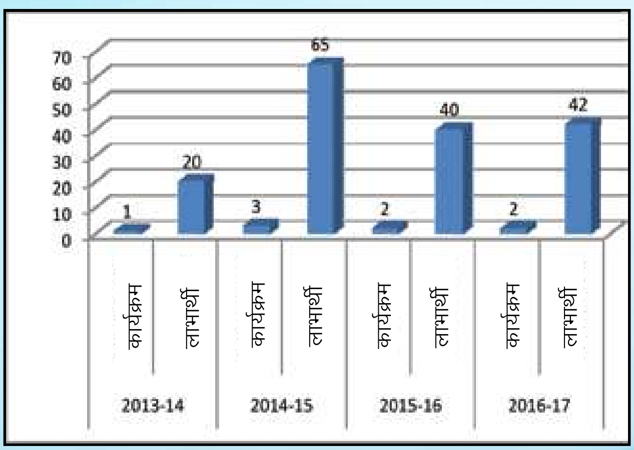

ग . अंतरराज्यीय अध्ययन दौरा

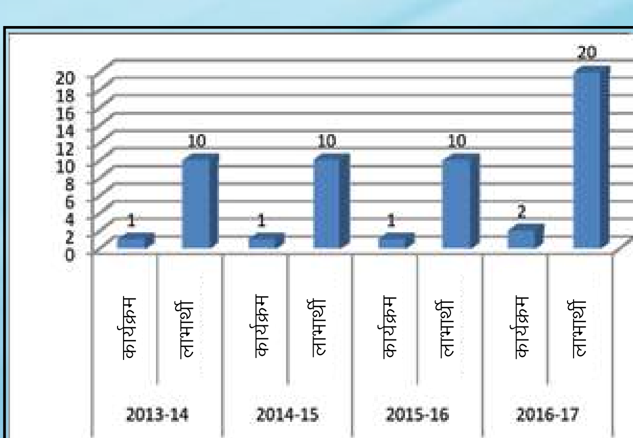

घ. एंटीबायोटिक अभियान

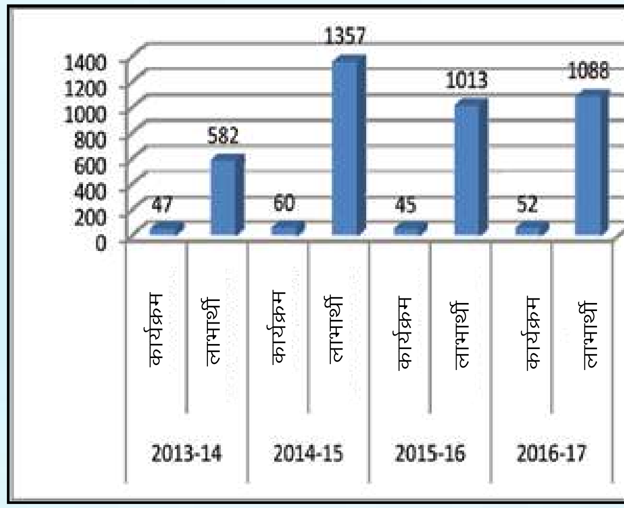

च. एनआरसीपी के लिए श्रिम्प के नमूने

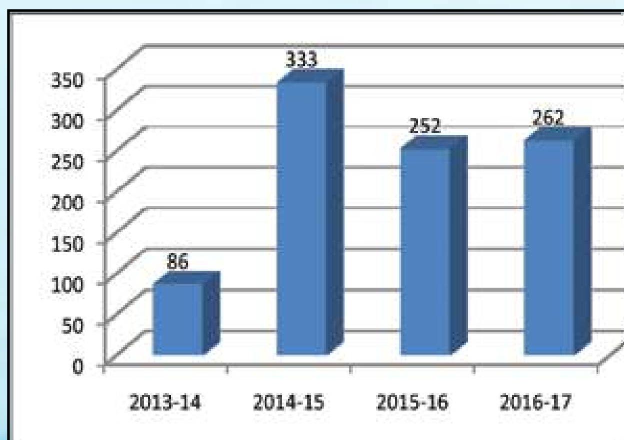

छ. वन्नमई उत्पादन

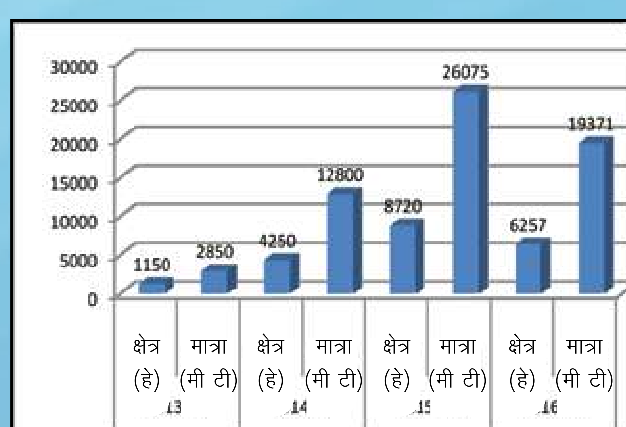

गतिविधियां (31जनवरी 2018 तक)

वित्तीय वर्ष के दौरान कुल 43 खेतों / 143.77 हेक्टर का मॅक्रो स्तर पर सर्वेक्षण किया गया ।

एमपीईडीए तकनीकी सहायता के तहत 125 हेक्टर क्षेत्र श्रिम्प संवर्धन के तहत लाया गया।

वित्तीय वर्ष के दौरान 8275 हेक्टर में कुल 30,935 मेट्रिक टन उत्पादन किया गया।

406 किसानों ने तकनीकी सहायता प्राप्त की।

प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

3 सामान्य प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

जलकृषि में प्रतिजैविक उपयोग के खिलाफ 31अभियान आयोजित किए गए जिसमें 744 किसानों ने भाग लिया ।

प्रजातियों के विविधीकरण पर 2 जागरूकता अभियान आयोजित किए गए जिसमें 48 किसानों ने भाग लिया ।

275 विशेष प्रशिक्षण (एमपीईडीए / इन्फोफ़िश / एनएसीए) आयोजित किए गए।

1 किसानों से भेट का आयोजन किया गया जिसमें 125 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

189 एनआरसीपी नमूने इकट्ठा किए गए ।

20 एमपीआरएनएल नमूने इकट्ठा किए गए।

उपर्युक्त के अतिरिक्त, 29 और 30 सितंबर 2017 में एमपीईडीए ने इन्फोफिश, एनबीएफजीआर और एनएसीए के सहयोग से हरीथा, आंध्र प्रदेश पर्यटन होटल, जीएनटी रोड, दर्गामित्ता, नेल्लोर में "भारत में श्रिम्प संवंर्धन में वर्तमान मुद्दों, प्रथाओं और नवाचारों" पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया, जिसमें पूरे देश में करीब 275 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया था । 2014 में भी नेल्लोर में "वर्तमान जलकृषि की स्थिति पर किसानों और हैचरी ऑपरेटरों की भेंट " अनुरूप हितधारकों की बैठक आयोजित की गई थी। जो एमपीईडीए क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा के दिशानिर्देश के अनुसार सैटेलाइट सेंटर द्वारा समन्वित किया गया था, जिसमें 360 से ज्यादा हितधारक शामिल हुए थे। इसी तरह, 24 जनवरी 2018 को गंगापट्टिनम में आयोजित 'नेल्लोर में श्रिम्प खेती की वर्तमान स्थिति' पर किसान भेट में चार गांवों, कुडिथिपलम, कोरुतुरु से 125 किसानों ने भाग लिया और फिशरीज कॉलेज मुथुकुर आरजीसीए से संबंधित विशेषज्ञों, उप निदेशक, एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय प्रभाग, विजयवाड़ा, नाक्सा आदि ने तकनीकी सत्र चलाए जिसमें श्रिम्प जलकृषि के विभिन्न मुद्दों को निपटाया गया।

नैतिकता की कहानी

एक समय दूर नदी में तीन मछलियां रहती थी। उनके नाम विचारशील, अति-विचारशील और विचारहीन थे । एक दिन उन्होंने निर्जन प्रकृतिकृत स्थान छोड़ दिया और वे एक शहर के पास नदी में रहने आयीं ।

अति- विचारशील ने दूसरी दो मछलियों से कहाः "यहाँ हमारे लिए बहुत सारे खतरे हैं । यहां मछुआरे सभी प्रकार के जाल और डोरी के साथ मछली पकड़ने के लिए नदी तट पर आते हैं । चलो हम फिर से प्रकृतिकृत स्थान में वापस चलें जहां हम रहते थे। "

लेकिन अन्य दो मछलियां इतनी आलसी और लालची थीं कि वे अपनी वापसी दिन-प्रति-दिन टालती रहीं । लेकिन एक दिन विचारशील और विचारहीन दोनों तैरते हुए अति-विचारशील के बहुत आगे निकल गए और वे मछुआरे के जाल को न देखते हुए उसमें फँस गए। अति-विचारशील ने उन्हें जाल में जाते देखा और उसने मन ही मन कहा "मुझे उन्हें बचाना चाहिए," वह जाल के चारों ओर तैरते हुए, सामने से पानी में छींटे उड़ाई, मानो एक मछली टूटे जाल से नदी के ऊपर की ओर चली गई हो । फिर उसने जाल के पीछे तैरते हुए वहाँ के पानी में छींटे उड़ाई मानो एक मछली टूटे जाल से नदी के नीचे की ओर चली गई हो ।

मछुआरे ने पानी से उडनेवाली छींटे देखी और सोचा कि मछलियां जाल टूटने के कारण एक नदी के ऊपर और दूसरी नीचे चली गयी हैं, और यह सोचकर उसने एक कोने से जाल को खींच लिया। बस तभी दोनों मछलियाँ जाल से बाहर आयीं और दूर वे अति-विचारशील के पास गईं । उन्होंने कहा, "अति-विचारशील आपने हमारी ज़िंदगी बचाई है," अब हम प्रकृतिकृत स्थान में वापस जाने के लिए तैयार हैं। इस प्रकार वे सभी अपने पुराने वास स्थान चले गए जहां वे तब से सुरक्षित जीवन व्यतीत करने लगे ।

बी. ईश्वरय्या
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, विज़ाग

हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2018-19 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.स	कार्य विवरण	क’ क्षेत्र		ख’ क्षेत्र		ग’ क्षेत्र	
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. ‘क’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को	100%	1. ‘ख’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को	90%	1. ‘ग’ क्षेत्र से ‘क’ क्षेत्र को	55%
		2. ‘क’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को	100%	2. ‘ख’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को	90%	2. ‘ग’ क्षेत्र से ‘ख’ क्षेत्र को	55%
		3. ‘क’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को	65%	3. ‘ख’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को	55%	3. ‘ग’ क्षेत्र से ‘ग’ क्षेत्र को	55%
		4. क क्षेत्र से क व ’ क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%	4. ख क्षेत्र से क व क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%	4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55%
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना		100%		100%		100%
3.	हिन्दी में टिप्पण		75%		50%		30%
4.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%		60%		30%
5.	हिन्दी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती		80%		70%		40%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)		65%		55%		30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण,आशुलिपि)		100%		100%		100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%		100%		100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोडकर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिन्दी ई-पुस्तक,सीडी/ डीवीडी, पैन ड्राइव तथा अंग्रेज़ी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।		50%		50%		50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद		100%		100%		100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो		100%		100%		100%

12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i)मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों, (उ.स/निदे/ससं)द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii)विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिन्दी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड/मैनुअल/फार्म/ प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		

विदेश में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

क.	हिन्दी में पत्राचार (भारत/विदेश स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
ख.	फाइलों पर हिन्दी में टिप्पण	50%
ग.	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार को 10 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 02 बैठकें
घ.	वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	वर्ष में कम से कम 4 बैठकें
ङ	कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रोनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
च.	हिन्दी टंकण करनेवाले कर्मचारी/आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
छ.	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिन्दी में और हिन्दी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए ।

तिलापिया कृषि

तिलापिया मत्स्य विश्व का दूसरा सबसे बड़ा कृषित मत्स्य है । भारत में तिलापिया मत्स्य की वाणिज्यिक कृषि बहुत सीमित है। हालांकि भारत में बहुत पहले (1952 से) से ही इसका प्रारम्भ हो चुका था एवं भारतीय मात्स्यिकी अनुसंधान समिति द्वारा वर्ष 1959 में तिलापिया पर प्रतिबंध लगाया गया था। हाल में, कुछ राज्यों में तिलापिया मत्स्य कृषि को कुछ शर्तों के साथ स्वीकृति दी गयी थी । आनुवंशिक रूप से उन्नत तिलापिया (जीआईएफ़टी)मत्स्य कृषि को कुछ दिशा निर्देशों के साथ स्वीकृति दी गयी थी।

एक लिंग तिलापिया मत्स्य कृषि के लाभ

एक लिंग तिलापिया मत्स्यों के अन्य मत्स्यों की तुलना में अपने स्वयं के फायदे हैं जैसे कि रोग प्रतिरोध के उच्च स्तर, प्रतिकूल मौसम स्थितियों में उत्तरजीविता दर एवं प्राकृतिक तालाब के चारे का उपभोग करने की क्षमता। इन तथ्यों के कारण, दिन प्रतिदिन तिलापिया मत्स्य की वाणिज्यिक कृषि बढ़ रही है ।

तिलापिया मत्स्य कृषि केलिए सर्वोत्तम तापमान

तिलापिया मत्स्य कृषि में अच्छी वृद्धि केलिए सर्वोत्तम तापमान 15° से. से 35° से. है । तथापि

तिलापिया मत्स्य 10°से. से 40° से. में जीवित रह सकता है ।

एक लिंग तिलापिया मत्स्य कृषि क्या है ?

तिलापिया मत्स्य कृषि की सबसे बड़ी चुनौती, असुविधाजनक वृद्धि के कारण समान तालाब में विभिन्न आयु एवं आकार के तिलापिया मत्स्य का होना है । चूंकि नर तिलापिया मत्स्य, मादा तिलापिया की अपेक्षा तेज वृद्धि करता है और अच्छा वजन हासिल करता है, इसलिए मादा को अलग करके नर तिलापिया मत्स्य के पालन पर विचार करना चाहिए जो "एक लिंग तिलापिया मत्स्य पालन " के नाम से जाना जाता है ।

तिलापिया मत्स्य कृषि की मांग और लाभ

चूंकि नर तिलापिया मत्स्य पूरक आहार से अच्छी तरह अनुकूलित होते हैं एवं इसकी तेज वृद्धि के कारण वाणिज्यिक तिलापिया मत्स्य कृषि में अत्यधिक लाभ हैं । स्थानीय के साथ - साथ अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में भी इस मत्स्य की अत्यधिक मांग है ।

तिलापिया मत्स्य कृषि के तरीके

बुनियादी तौर पर, एक लिंग तिलापिया मत्स्य का पालन नर्सरी तालाब के साथ ही साथ संभरण तालाबों में दो चरणों में किया जाता है ।

नर्सरी पालन में तालाब चयन

नर्सरी तालाब का चयन करते समय निम्न मदों को ध्यान में रखना चाहिए

- तालाब में सूरज की पर्याप्त रोशनी सुनिश्चित करें
- तालाब का जल से न पूरित होना सुनिश्चित करें
- तालाब का हानिकारक घास मुक्त होना सुनिश्चित करें

समान्यतः एक लिंग तिलापिया मत्स्य कृषि में 2 से 4 फीट गहराई वाले तालाब को मत्स्य पालन केलिए उत्तम माना जाता है ।

तिलापिया मत्स्य कृषि में पालन तालाब का प्रबंधन

- तालाब से पूरा पानी निकालकर इसे सुखाया जाये । यदि सुखाना संभव नही है तो, तालाब से स्वजातिभक्षी एवं अवांछित मत्स्यों का उन्मूलन करने केलिए रसायन का उपयोग किया जा सकता है ।
- प्रति एकड़ तालाब क्षेत्र में 600 किलो गोबर, 15 किलो उर्वरक, 100 किलो चूना, 7 किलो ट्रिपल सुपरफॉस्फेट (टीएसपी), 2 किलो पोटेश के मूरेट (एमओपी) डालें ।
- साँप, मेंढक तथा अन्य जंगली परभक्षियों के प्रवेश को बंद करना या रोकना सुनिश्चित करना। तालाब क्षेत्र के चारों ओर जालीदार बाड लगाकर ऐसा किया जा सकता है ।
- एक सप्ताह तालाब उर्वरक डालने के बाद, 3 से 4 सप्ताह आयु वाले एक लिंग तिलापिया को तालाब में संभरित किया जाना चाहिए। सामान्यतः तालाब के प्रति एक एकड़ में 1 लाख से 2 लाख तक एक लिंग तिलापिया मत्स्य रखा जा सकता है ।

- तालाब में कुल संभरित तिलापिया मत्स्य के शरीर भार के 15% की दर पर उच्च प्रोटीन वाला चारा डाला जाना चाहिए । उदाहरण केलिए, यदि तालाब में मत्स्य का 100 किलो स्टॉक है, तो उन्हें प्रतिदिन 15 किलो चारे की आवश्यकता होती है । एक दिन में 2 या 3 बार चारा देने की अपेक्षा एक ही बार चारा देने की सिफ़ारिश की जाती है । इस प्रणाली में 2 महीने

तक मत्स्य को पालें या जब प्रत्येक मत्स्य 30 ग्राम का हो जाये तो उन्हें मुख्य संभरण तालाब में अंतरित करें ।

संग्रहण तालाब प्रबंधन में तिलापिया मत्स्य कृषि :-

- अब नर्सरी तालाब में पाले गए एवं अंतरित किए गए मत्स्य (2 महीने का या 30 ग्राम भार वाला) के प्रबंधन का समय है ।
- संभरण तालाब की गहराई नर्सरी तालाब की तरह रखें या थोड़ा और गहरा करें ।
- तालाब से सभी प्रकार के परभक्षियों तथा अवांछित प्रजातियों को हटा देना चाहिए । तालाब की अवांछित सामग्रियों को हटाने केलिए रसायन का प्रयोग भी किया जा सकता है ।
- प्राकृतिक मत्स्य चारा तैयार करने केलिए प्रति एक एकड़ तालाब क्षेत्र में 600 किलो गोबर, 12 किलो यूरिया, 100 किलो चूना, 2 किलो पोटेश के मूरेट (एमओपी) एवं 6 किलो ट्रिपल सुपरफॉस्फेट (टीएसपी) डालें । समान्यतः उर्वरक के प्रयोग के एक सप्ताह बाद प्राकृतिक चारा बढ़ने लगता है । यही वह समय है जब आप संभरण तालाब में नर्सरी में पाले गए मत्स्य (2 महीने बड़े और 30 ग्राम भार वाले) का संभरण करें । साधारणतः 1 एकड़ संभरण तालाब क्षेत्र में 20 से 25 हज़ार मत्स्य रखे जा सकते हैं ।
- प्राकृतिक तालाब मत्स्य चारा बनाए रखने केलिए प्रत्येक सात दिनों में 500 किलो गोबर, 3 से 4 किलो यूरिया तथा 2 किलो ट्रिपल सुपरफॉस्फेट (टीएसपी) डालें। यदि आप पूरक मत्स्य चारे का प्रयोग कर रहे हैं तो तालाब में उर्वरक डालना बंद कर दें ।
- मत्स्य का भार 100 से 110 ग्राम तक बढ़ जाये तो 5% से 6 % की दर पर प्रतिदिन पानी बदलना चाहिए।
- तालाब में संभरण के बाद 3 से 4 महीने के भीतर एक लिंग तिलापिया 200 ग्राम से 250 ग्राम शरीर भार पीआरपीटी कर लेता है । इस समय

आप मत्स्य की बिक्री शुरू कर सकते हैं । तथापि उच्च मूल्य प्राप्त करने केलिए शरीर भार 400 से 500 ग्राम तक पहुँचने का आपको इंतज़ार करना पड़ेगा ।

वाणिज्यिक एकलिंग तिलापिया मत्स्य कृषि का चारा दर :-

मत्स्य में तेज वृद्धि एवं उच्चतम शरीर भार केलिए वाणिज्यिक तिलापिया मत्स्य उत्पादन में पोषक भोजन दिया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है । निम्नलिखित तालिका दैनिक औसत चारा आवश्यकताओं का संक्षेप देता है ।

शरीर भार (ग्राम)	दैनिक चारा दर	प्रतिदिन कितनी बार दिया जाना है
20 से 25	8 से 10%	3 से 4
50 से 100	6 से 8%	3 से 4
100 से 200	5 से 6%	3
200 से ऊपर	2 से 4%	3

एक लिंग तिलापिया मत्स्य कृषि व्यवसाय फायदेमंद होने के कारण दिन प्रतिदिन तेजी से वृद्धि कर रही है। यदि आप बड़े पैमाने पर तिलापिया मत्स्य कृषि करना चाहते हैं तो वाणिज्यिक कृषि केलिए इमदाद उपलब्ध है । अधिक जानकारी केलिए अपने स्थानीय जलकृषि अथवा मात्स्यिकी विभाग से संपर्क करें ।

मछलियों के साथ तैरने के अलावा उनसे बातचीत भी करता है ये रोबोट !

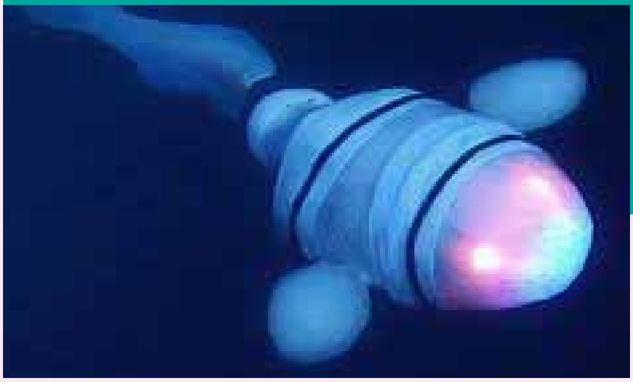

मौजूदा समय में मुश्किल से मुश्किल काम के लिए इंसानों का विकल्प ढूंढने की दशा में रोबोट के विकास पर तेजी से काम हो रहा है। इसी के चलते वैज्ञानिकों ने अब एक ऐसा रोबोट तैयाक किया है जो मछलियों की तरह तैर सकता है।

वैज्ञानिकों ने छोटे आकार का एक नया रोबोट विकसित किया है जो मछलियों के साथ तैर सकता है। इसी के साथ वह यह भी सीख सकता है कि मछलियां आपस में कैसे संवाद करती हैं। साथ ही ये रोबोट उनकी दिशा बदल सकने के और उन्हें एक साथ लाने जैसा कार्य भी कर सकता है।

स्विट्जरलैंड के इकोल पॉलिटेक्निक फेडरल डे लौसेन के शोधकर्ताओं ने ऐसा रोबोट विकसित किया है जो जेब्रा मछलियों की दुनिया में पूरी तरह समाहित हो सकता है। मछली का प्रतिरूप, यह रोबोट सात सेंटीमीटर लंबा है। इसका आकार और परिमाण बिलकुल मछली जैसा है।

शोधकर्ताओं ने अध्ययन के लिए जेब्रा मछली को इसलिए चुना क्योंकि एक बेहद स्वस्थ प्रजाति है और इनका समूह बहुत तेजी से दिशा बदलता है और तेजी से इधर से उधर चला जाता है।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम

प्रस्तावना :

एमपीईडीए गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम को (वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत) वर्ष 2004 में मत्स्य और मत्स्य उत्पादों में रासायनिक परीक्षण के लिए स्थापित किया गया था। इस प्रयोगशाला में छह तकनीकी और दो प्रशासनिक कर्मचारी काम करते हैं।

तकनीकी:

एमपीईडीए प्रयोगशाला भीमावरम जलकृषि उत्पादों (एफ एंड एफ) में विभिन्न मापदंडों के अवशेषों के विश्लेषण के लिए परीक्षण सुविधा प्रदान करती है जो नीचे सूचीबद्ध हैं:

1. *एंटीबायोटिक्स:*

समूह - ए - प्रतिबंधित नाइट्रोफ्यूरान मेटाबोलाइट्स, क्लोराम्फेनिकोल और नाइट्रोमिडाज़ोल

समूह - बी सल्फ़ोनेमाइड्स (सल्फाडायाज़िन), क्विनोलोन्स (ऑक्सोलिनिक एसिड और नालिडिक्सीक एसिड) और

4 - एपीमर्स के साथ टेट्रासाइक्लिन्स

2. *ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशक:*

डीडीटी के आईसोमर्स और डीडीटी के मेटाबोलाइट्स, बीएचसी के आईसोमर्स (अल्फा, बीटा और गामा) , एन्ड्रिन, क्लोर्डन के साथ उसके आईसोमर्स, एल्ड्रिन, डीसल्डिन, हेप्टाक्लोर और उसके एपोक्साइड, एचसीबी और पीसीबी।

3. *मायकोटॉक्सीन: अफ्लेटोक्सिन बी और बी २*

4. *डाईस (रंग) : मालाचाइट ग्रीन (हरा) और ल्यूकोमालाचाइट ग्रीन (हरा)*

5. *एन्थेल्मिनटिक्स (एंटीबायोटिक द्रव्यों - इवरमेक्टिन और इम्मामेक्टिन)*

इन सभी पद्धतियों को यूरोपीय दिशानिर्देशों के अनुसार मान्य किया गया है और प्रयोगशाला को आईएसओ 9001, ईआईसी एलएएस-2010 योजना और आईएसओ/आईईसी 17025 (एनएबीएल) द्वारा मान्यता प्राप्त है।

एमपीईडीए गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला राष्ट्रीय अवशेष नियंत्रण योजना के अनुसार नमूने का विश्लेषण करती है।

एनआरसीपी के अलावा, यह प्रयोगशाला उपर्युक्त उल्लेखित पैरामीटर के लिए एलिसा स्क्रीन्ड पॉजिटिव नमूने / एलिसा लैब मॉनिटरिंग नमूने / (स्थानीय बाजार) नमूने और व्यावसायिक नमूनों का भी विश्लेषण करती है।

एमपीईडीए गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला किसी भी रासायनिक विश्लेषण चुनौती या आवश्यकता को पूरा करने के लिए तकनीक और उपकरण की एक विस्तृत श्रृंखला से सुसज्जित है।

1. *यूएचपीएलसी एमएस (मेक: थर्मो फिशर साइंटिफिक):*

यह एंटीबायोटिक्स के विश्लेषण के लिए इस्तेमाल किया जाता है जैसे नाइट्रोफ्यूरान मेटाबोलाइट्स, क्लोराम्फिनिकोल और, नाइट्रोमिडाज़ोल 4-एपिमर्स के साथ टेट्रासाइक्लिन , एंथेल्मिनेटिक्स (आईवेरमेक्टिन और इम्मामेक्टिन).

2. यूएचपीएलसी (मेक: शिमाड्ज़ू):

मायकोटॉक्सिन (एफ़्लोटॉक्सिन बी 1 और बी 2) के विश्लेषण के लिए उपयोग किया जाता है ।

3. एचपीएलसी (मेक: पेर्किन एल्मर):

इसका उपयोग क्विनोलोस (ऑक्सोलिनिक एसिड और नलिडिक्सिक एसिड) और सल्फाडियाज़िन के विश्लेषण के लिए किया जाता है।

4.जीसी एमएसएमएस (मेक:एजीयें):

आर्गनोक्लोरीन कीटनाशकों (ओसीपी) और पोलिक्लोरीनेटेड बाय-फेनिल (पीसीबी) के विश्लेषण के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

2017-18 के दौरान गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला में विश्लेषण किए गए नमूनों की कुल संख्या निम्नानुसार हैं:

विविरण	नमुनों की संख्या
एनआरसीपी	1682
एलिसा मानीटरिग नमूने	76
एलिसा स्क्रीन्ड पॉसीटीवह नमूने	18
स्थानीय बाजार (लोकल मार्केट) के नमूने	36
व्यावसायिक नमूने	5
कुल	**1816**

गुणता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम ने हर साल दक्षता परीक्षण में भाग लिया है। 2017-18 के दौरान इस प्रयोगशाला ने नाइट्रोफ्यूशँन मेटाबोलाईट्स् (ईआईए, मुम्बई द्वारा आयोजित) और क्विनोलोन्स (एफएपीएएस, यूके द्वारा आयोजित) में भाग लिया।

दक्षता परीक्षण के अलावा, एनएबीएल के अनुपालन के लिए इस प्रयोगशाला में परीक्षण के सभी मापदंडों के लिए अंतर प्रयोगशाला परीक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाए है और उसमें भाग लिया जाए हैं। एमपीईडीए गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम सभी कर्मचारियों के लिए पद्धति, प्रमाणीकरण, यंत्रविन्यास एवं परीक्षण के ज्ञान में निरंतर सुधार हेतु राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रदान करता है ।

मुख्यालय के निर्णय के अनुसार, एमपीईडीए गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, भीमावरम, प्रशिक्षार्थी विश्लेषक को एक वर्ष का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जिन्हें उद्योग विकास के भाग के रूप में हर साल एक साल के अनुबंध पर भर्ती किया जाता है।

इस प्रयोगशाला के तकनीकी कर्मियों को आंध्र प्रदेश (भीमावरम, अमलापुरम और काकीनाडा) के एलीसा प्रयोगशालाओं की तकनीकी मार्गदर्शन और तकनीकी निगरानी में भी शामिल किया जाता है।

समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला, नेल्लोर

पशु चिकित्सा दवा अवशेषों / प्रदूषकों की उपस्थिति और विकास का वर्धन करने वाले तत्व जैसे एंटीबायोटिक्स, एन्फेल्मंटिक्स, स्टेरॉयड, स्टिल्बेंस और रंजक और पर्यावरण प्रदूषकों जैसे कीट नाशकों और मत्स्य और मात्स्यिकी उत्पादों में भारी धातुओं की निगरानी के लिए नेल्लोर में एमपीईडीए गुनि, प्रयोगशाला वर्ष 2003 में स्थापित की गई थी।

जलकृषि उत्पादों के परीक्षण के लिए सक्षम प्राधिकरण की ओर से राष्ट्रीय अवशेष नियंत्रण योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रयोगशाला जिम्मेदार है। आयात करने वाले देशों से विभिन्न सरकारी एजेंसियां और नियामक निकाय इन प्रयोगशालाओं का दौरा करती हैं।

एमपीईडीए गुनि, प्रयोगशाला, नेल्लोर वर्ष 2006 से आईएस / आईएसओ / आईईसी 17025: 2005 के तहत एनएबीएल द्वारा मान्यता प्राप्त है, वर्ष 2005 से ईआईसी प्रयोगशाला अनुमोदन योजना 2010 के तहत मंजूरी प्राप्त है और वर्ष 2005 से आईएसओ 9 001: 2015 के साथ प्रमाणित भी है।

कार्यकलाप

नेल्लोर में एमपीईडीए प्रयोगशाला वार्षिक एनआरसीपी के अनुसार जलकृषि उत्पादों में विभिन्न मापदंडों के अवशेष विश्लेषण के लिए परीक्षण सुविधा प्रदान करती है, जो नीचे सूचीबद्ध हैं:

- निषिद्ध/अनधिकृत पशु चिकित्सा औषध/ प्रतिजैविकी जैसे
- क्लोरमफेनीकाल
- नाइट्रोफ्यूरान मेटाबोलाइट्स (एएमओज़ेड, एओज़ेड,एएचडी,एससीए)
- नाइट्रोइमिडाजोल

2. *अनुमत्त/ अधिकृत औषध जैसे*

- सल्फ़ाडैजिन
- क्विनोलॉन्स (ऑक्सोलिनिक एसिड और नलिडिक्सिक एसिड)
- टेट्रासायक्लिन्स (टेट्रासायक्लिन, ऑक्सीटेट्रासायक्लिन तथा 4 एपिमर्स के साथ क्लोरटेट्रासायक्लिन)

1. ओर्गानोक्लोरीन कीटनाशक जैसे बीएचसी(अल्फा, बीटाऔर गामा) के आइसोमर्स 2, 4 डीडीटी, 4,4 डीडीटी, एंड्रिन, क्लोर्डेन, एल्ड्रिन, डाइएल्ड्रिन, हेप्टाक्लोर, हेप्टाक्लोर एपोक्साइड, एचसीबी
2. पीसीबी जैसे डयाक्सिन और पीसीबी
3. रासायनिक तत्व (भारी धातु) जैसे. पारा, कैडमियम, लेड, और आर्सेनिक

- माइकोटोक्सिन (एफ़्लाटोक्सिन बी1 तथा बी2)
- रंजक (मैलाकाइट हरा और ल्यूको मैलाकाइट हरा)
- स्टेरॉयड और स्टिल्बेंस
- एन्थेल्मिंटिक्स (इवरमेक्टिन एवं एमामेक्टिन)
- राष्ट्रीय/यूरोपीय संघ की मांग/ आयातक देशों की आवश्यकता के अनुसार अन्य मापदंडों को भी अनवरत विकास के प्रयास के रूप में अनुमोदन की

संभाव्यता के अधीन लाया जाएगा ।

पुष्टीकरण केलिए विभिन्न एलिसा प्रयोगशालाओं के नमूने/ जांच परिणामों की एलीसा प्रयोगशालाओं की विश्वसनीयता की मोनीटरिंग

" स्वच्छ भारत अभियान - एक कदम स्वच्छता की ओर "

स्वच्छता ही ईश्वर का दूसरा नाम है, जहां स्वच्छता हो भगवान का वहाँ बसेरा है ।

स्वच्छ भारत अभियान एक देशव्यापी अभियान है, जिसका उद्देश्य लोगों को स्वच्छता की ओर जागरूक कराना है । महात्मा गाँधी ने अपने आस-पास की स्वच्छता बनाए रखने संबंधी राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था, इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी की 145वीं जयंती के उपलक्ष्य पर 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की । इस अभियान का उद्देश्य अगले पांच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके।

स्वच्छता एक ऐसा कार्य है जो हर व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से करना होगा। जो हमारे अच्छे स्वस्थ जीवन के लिये एक अच्छी आदत और स्वस्थ तरीका बन जाए । हमे अपने रोजमर्रा के जीवन में स्वच्छता को बनाये रखना है, यह हमारी जिम्मेदारी और दायित्व है कि हम इस अभियान के तहत अपने देश को साफ-सुथरा रखने में सहयोग दें । हमें विश्वास है कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले

चंद वर्षों में एक स्वस्थ्य देश, स्वस्थ्य समाज और स्वस्थ्य भारत जरूर बन जाएगा, क्योंकि स्वच्छता से ही स्वस्थ्यता प्राप्त होती हैं । सरकार प्रौद्योगिकी के माध्यम से नागरिकों, स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी कार्यालयों, प्राइव्हेट संस्थाओं एवं संगठनों आदि को अभियान संबंधी प्रयासों के बारे में स्वच्छता संबंधी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है । हमें हमारे रेल्वे स्टेशन, सरकारी अस्पताल, सार्वजनिक जगह,खेलकूद के मैदान, आस-पास की जगह आदि साफ-सुथरी रखनी होगी, इसीलिए प्रधानमंत्री द्वारा नामचीन हस्तियों को भी इस अभियान के तहत जुडने के लिए आमंत्रित किया गया था । इसे आगे बढाने के लिए हमें एक श्रृंखला के रूप में काम करना होगा ।

इस अभियान का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को इस कार्य में जोडकर जन-आंदोलन बनाना है। इसका लक्ष्य केवल साफ सफाई करना ही नहीं बल्कि लोगों के सहयोग से देश को हरा-भरा बनाना है, जिसके लिए हमें अधिक से अधिक पेड लगाने होंगे ,गाँव और शहरों में शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर स्वच्छ भारत निर्माण के लिए सहयोग देना होगा। देश में पर्यटन को बढावा देकर देश की छवि सुधारनी होगी । जिससे 2019 तक गांधीजी का स्वच्छ भारत का सपना पूरा किया जा सके ।

“ हर कोशिश से आगे बढना, पूरे विश्व को है दिखाना,
स्वच्छ भारत अभियान, स्वच्छ भारत की हो पहचान ”

मृणालिनी प.आरेकर,
क्षे प्र, मुंबई

बिना शब्दों की भाषा

दुनिया में बहुत सी भाषाएं हैं । अगर पूछा जाएगा कि अधिकतम लोग कौन सी भाषा समझते हैं तो उत्तर आएगा 'अंग्रेज़ी' । अगर भारत की बात करें तो 'हिंदी' ही सबसे ज़्यादा बोलनेवाली, एक-दूसरे को संवाद के माध्यम से जोड़नेवाली और समझ में आनेवाली सर्वश्रेष्ठ भाषा है। लेकिन एक और भाषा है जो हम सभी को जोडती है और वह है हृदय की भाषा ।

अगर जगत का विचार किया जाए तो न जाने कितनी जातियां है । उनकी बोली भाषा है। नयी भाषा सीखने की हम कोशिश भी करते हैं। व्यापार करने वाले लोग तो इसमें सबसे आगे हैं। तरक्की की ऊंचाई को छूने के लिए जर्मन,जापान, स्पेन और चीन की भाषा भी हम सीखने लगे हैं। लेकिन अगर आदमी ने हृदय की भाषा को नहीं समझा, तो कुछ नहीं समझा।

दुख के क्षणों में हम आक्रोश और आंसू में इतने डूब जाते हैं कि बोलना होता ही नहीं। गहरी पीडा में तो मौन भी हो जाते हैं । लेकिन कभी गौर किया है कि आनंद के अतियुक्त क्षणों में भी हम शब्दों को भूल जाते हैं और केवल अनुभूती में रहना पसंद करते हैं। यह इसीलिए होता है क्योंकि भावना को व्यक्त करने के लिए हर वक्त शब्दों का होना जरूरी नहीं होता। अंतःकरण की भाषा सहज समझ में आती है। अचानक धक्का खाकर गिरनेवाले व्यक्ति को किसी अनजान व्यक्ति ने उठा लिया तब शब्द का आदान-प्रदान जरूरी नहीं है। धन्यवाद की बात तो उठते वक्त उस व्यक्ति ने बिना बोले उसे बोल दी । इस तरह अगर हम हर एक व्यक्ति के धर्म, जाति, देश को न जानकर केवल स्नेह से भरे हुए अंतःकरण से मदद करें तो कितनी जल्द ही दूरियाँ मिट जाएंगी 'आदमी' को इंसान बनने के लिए (इंसान का मतलब है जिसके पास इंसानियत है) ज़रूरी है प्रेमपूर्ण होना। बस संत कबीर का एक दोहा याद रखो -

"पोथी पढि-पढि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय " ।

भयभीत

गुस्सा

प्यार

उदास

सब काम कर दिया

माफ़ कीजिये

रुकें

और अधिक

पानी

कृपया

शशेन्द्र एम शिरोडकर
उप क्षेत्रीय प्रभाग, कारवार

सुबह

गरम गरम लड्डू सा सूरज
लिपटा बैठा लाली में
सुबह सुबह रख आया कौन
इसे आसमान की थाली में ।

मूंदी आँख खोली कलियों
चिडियों ने गाया गाना
गुन गुन करते भवरों ने
खिलते फूलों को पहचाना ।

तभी आ गई फुदक फुदक कर
एक तितलियों की टोली
मधुमक्खियों ने मधु रस लेकर
भर डाली अपनी झोली ।

उठो उठो हम लगे काम पर
तब आगे बढ पाएंगे,
वे क्या पाएंगे जीवन में
जो सोते हर जाएंगे ।

शिक्षक

आदर्शों
की मिसाल बनकर
बाल जीवन संवारता शिक्षक ।

सदाबहार फूल सा खिलकर
महकता और महकाता शिक्षक ।

नित नए प्रेरक आयाम लेकर
हर पल भव्य बनाता शिक्षक ।

संचित ज्ञान का धन हमें देकर
खुशियां खूब मनाता शिक्षक ।

हमें चलना है उनके पदचिन्ह पर
क्योंकि हमारा भविष्य निर्भर है
शिक्षक पर ।

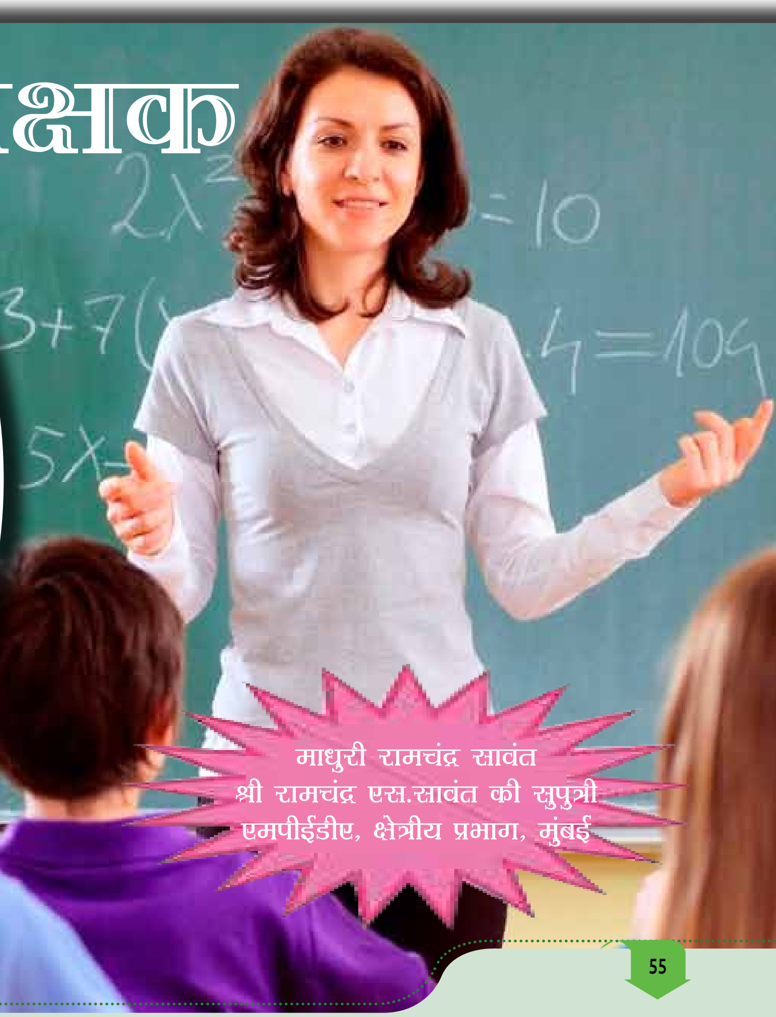

माधुरी रामचंद्र सावंत
श्री रामचंद्र एस.सावंत की सुपुत्री
एमपीईडीए, क्षेत्रीय प्रभाग, मुंबई

तीन सवाल

एक बार सभी दरबारी, बीरबल एवं राजा अकबर दरबार में बैठे थे सभी लोग दरबार के अलग अलग पदों एवं मंत्री पदो के बारे में विचार विमर्श कर रहे थे उनमें से एक मंत्री, जो महामंत्री का पद पाना चाहता था। उसने मन ही मन एक योजना बनाई। उसे मालूम था कि बीरबल उससे ज्यादा बुद्धिमान था, लेकिन फिर भी वह मुख्य सलाहकार का पद पाना चाहता था।

एक दिन दरबार में अकबर ने बीरबल की बहुत तारीफ की। यह सब सुनकर उस मंत्री को बहुत गुस्सा आया। उसने महाराज से कहा कि यदि बीरबल मेरे तीन सवालों का उत्तर सही सही दे देता है तो मैं उसकी बुद्धिमता को स्वीकार कर लूंगा। यदि नहीं तो इससे यह सिद्ध होता है कि वह आपका चापलूस है। अकबर को मालूम था कि बीरबल उसके सवालों का जवाब जरूर दे देगा इसलिए उन्होंने उस मंत्री की बात मान ली।

उस मंत्री के तीन सवाल थे

1. आकाश में कितने तारे हैं?

2. धरती का केन्द्र कहां है?

3. सारे संसार में कितने स्त्री और कितने पुरुष हैं?

अकबर ने बीरबल पर भरोसा जताते हुए उसे इन सवालों के जवाब देने के लिए कहा और साथ ही यह शर्त रखी कि यदि वह इनका उत्तर नहीं जानता है तो मुख्य सलाहकार का पद छोड़ने के लिए तैयार रहे।

बीरबल ने कहाः बादशाह सलामत मैं इन प्रश्नों के उत्तर जानता हूं, सुनिए।

पहले सवाल के जवाब में बीरबल ने एक भेड़ मंगवाई और कहा जितने बाल इस भेड़ के शरीर पर हैं आकाश में उतने ही तारे हैं। उन्होंने उस मंत्री की ओर देख कर कहा, आप गिनकर तसल्ली कर लो।

दूसरा सवाल के जवाब में बीरबल ने ज़मीन पर कुछ लकीरें खींची और कुछ हिसाब लगाया। फिर एक लोहे की छड़ मंगवाई। उसे एक जगह गाड़ दिया और बादशाह से कहा - बादशाह बिल्कुल इसी जगह धरती का केन्द्र है, चाहें तो आप खुद जांच लें। बादशाह बोले ठीक है अब तीसरे सवाल का जवाब देगा।

तीसरे सवाल के जवाब में बीरबल ने कहा, जहांपनाह तीसरे सवाल का जवाब बड़ा मुश्किल है, क्योंकि इस दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो ना तो स्त्री की श्रेणी में आते हैं, ना ही पुरुषों की श्रेणी में। उनमें से कुछ लोग तो हमारे दरबार में भी हैं, जैसे कि ये मंत्री जी। महाराज यदि आप इनको मौत के घाट उतार दें तो मैं स्त्री पुरुष की सही सही संख्या बता सकता हूं।

अब मंत्रीजी सवालों का जवाब सुनकर थरथर कांपने लगे और महाराज से बोले, महाराज बस बस मुझे मेरे सवालों का जवाब मिल गया। मैं बीरबल की बुद्धिमानी को मान गया हूं। महाराज हमेशा की तरह बीरबल की तरफ पीठ करके हंसने लगे और इसी बीच वह मंत्री दरबार से भाग गया।

सीखः कभी किसी परीक्षा से घबराएं नहीं, जो सवाल जितने अजीब होते हैं, उनके जवाब भी उसी तरह दिए जा सकते हैं। अगर दिमाग को शांत और सक्रिय रखा जाए तो हम किसी भी सवाल का जवाब दे सकते हैं।

चेपला इगुरु (आंध्रा मत्स्य करी)

आवश्यक सामग्री

फिश टिक्का (सोल मछली)	:	800 ग्राम
सरसों का तेल	:	100 मिली

मसाला पेस्ट

जीरा	:	2 चम्मच
साबुत धनिया	:	3 चम्मच
घिसा हुआ नारियल	:	150 ग्राम
साबुत लाल मिर्च	:	7
करी पत्ता	:	2 ग्राम
मेथी-धनिया	:	1 चम्मच
कटा हुआ प्याज	:	120 ग्राम
अदरक-लहसुन पेस्ट	:	3 चम्मच
कटी हुई हरी मिर्च	:	6
हल्दी पाउडर	:	1 चम्मच
नमक	:	स्वादानुसार
इमली	:	100 ग्राम

तैयार करने की विधि

एक बर्तन लेकर उसे आंच पर रखें । उसमें तेल, जीरा, साबुत धनिया, लाल मिर्च और घिसे हुए नारियल को डालकर भूनें। इसे 2 से 3 मिनट तक फ्राइ होने दें, फिर निकालकर ब्लेंडर में डालें एवं पानी डालकर पतला पेस्ट बना लें । इसे अलग रख लें ।

एक भारी पेंदे वाला बर्तन लें और उसमें सरसों का तेल, मेथी दाना और करी पत्ता डालें । इसके बाद इसमें प्याज डालकर भूरा होने तक पकाएं। इसमें अदरक-लहसुन का पेस्ट मिलाएं और एक मिनट के लिए पकने दें।

इसमें मसाला पेस्ट, इमली का पल्प, नमक और पानी मिलाएं। जब यह उबलने लगे तो मछली डाल दें। इसे धीमी आंच पर 5-8 मिनट तक पकाएं।

तीखे मसालों एवं गाढ़े ग्रेवी में पकाई हुई, मसालेदार मछली तैयार । इसे गरमागरम परोसें और इस लाजवाब प्रामाणिक आंध्र मत्स्य करी का स्वाद उठाएँ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची से समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण को

ओवरऑल ट्रॉफी

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संयुक्त राजभाषा समारोह, 2017
हिन्दी प्रतियोगिताओं में ओवरऑल ट्रॉफी प्राप्त करते हुए
समुद्री उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के संयुक्त निदेशक (विपणन)-
डॉ. राम मोहन. एम.के., हिन्दी अधिकारी- श्रीमती तुलसी नायर, एवं अन्य कर्मचारी गण-
कु. सरिता एम.एम., श्रीमती स्मिता वी. जी., श्रीमती दिव्या एम. सी, श्रीमती सुमनामोल पी. एस.,

BEACH